

देवीस्तोत्रपीठम्



24
E
7409

JACL-KRC



017409

डॉ० मनोहर लाल जुगराण

पुस्तक-परिचय

अनादि काल से उत्तराखण्ड देवभूमि, तपोभूमि तथा स्वर्गभूमि के रूप के विश्रुत रहा है। हिमालय तथा गंगा की सार्वभौमिक पावनता के कारण सदा से यह भूमि एक ही भगवान् के विविधरूप देवी-देवताओं की सत्ता से व्याप्त रही है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने आध्यात्मिक ज्ञान के संचय के लिए शान्ति एवं नीरवता के इन महान् भण्डारों तक पहुँचने के मार्गों का पता लगा लिया था। यही कारण रहा कि युग-युग में परिव्राजकों से लेकर चक्रवर्ती नरेशों तथा सामान्य गृहस्थों, सभी की यही इच्छा रही कि उनके जीवन की अन्तिम घड़ियाँ उत्तराखण्ड में बीतें। वैदिक साहित्य से लेकर रामायण, महाभारत, पुराणों तथा कालान्तरवर्ती संस्कृत साहित्य में इस अनुशंसा के सहस्रों प्रमाण मिलते हैं। 'देवीस्तोत्रपीठम्' की रचना भी देवी की स्तुति, पीठ तथा तीर्थ एवं मन्दिर इन तीन खण्डों में उत्तरांचल के अतिशय पवित्र धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिवेश में की गई है। यह पुस्तक सरल एवं सुबोध संस्कृत में रचित तीर्थ-यात्रा एवं पर्यटन की दृष्टि से अत्यधिक उपयोगी है।

रिसर

ISBN - 8155394-28-8

Rs. 195/-

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर
परिसर

वर्गीकरण सं.

पुस्तक सं. 17409 दिनांक.....

यह पुस्तक नीचे अङ्कित तिथि या उससे पूर्व लौटा दी जानी चाहिये। यदि पुस्तक निर्धारित तिथि से अधिक समय तक पाठक अपने पास रखेंगे तो 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क देय होगा।

[illegible]

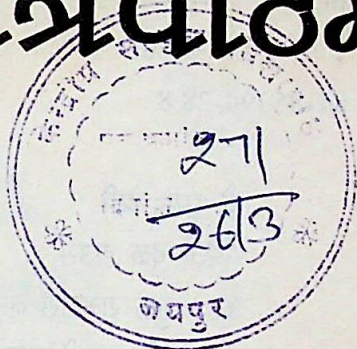
SV-2024

अन
तपो
है।
के
के
रही
ज्ञान
इन
पता
युग
तथ
कि
उत्त
राम
संस्
प्रमा
भी
इन
धारि
यह
तीर्थ
उप

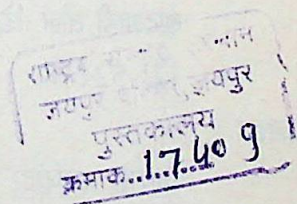
10/12/1

५ त्रिकालम्
३५
३६/३

देवीस्तोत्रपीठम्



डॉ. मनोहर लाल जुगराण



सरिता बुक हाउस
दिल्ली (भारत)

प्रथम संस्करण 2001

@ स्वयंता

मूल्य : रु.195.00

ISBN 81-85394-28.8

प्रकाशक पी. एस. नेगी
सरिता बुक हाउस
324 गुरु रामदास नगर
मेन मार्केट लक्ष्मी नगर
दिल्ली 110092
① 2450792

कम्प्यूटराइड व लेजर

मै. विनी कम्प्यूटर्स
बादशाही थौल, टिहरी गढ़वाल
① 52118

कवर डिजाइन

एक्सल कम्प्यूटर सेंटर
मेन मार्केट रुद्रपयाग (उत्तरांचल)
फोन : 01364 - 33712

: मुद्रक :

मयंक ऑफसेट प्रोसेस

794-95 गुरु राम दास नगर, लक्ष्मी नगर,
दिल्ली - 110 092



ब्रह्मसात्
माँ जमुना
की
आत्मरूप
अमर-ज्योति
को
समर्पित

नित्यानन्द स्वामी
मुख्यमंत्री



विधान भवन,
देहरादून

दिनांक : ४-५-२००१

सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि डा. एम.एल. जुगरान, उपाचार्य एवं अध्यक्ष संस्कृत विभाग, हेनउबो गढ़वाल विश्वविद्यालय स्वामी रामतीर्थ परिसर बादशाहीथौल (टिहरी गढ़वाल) द्वारा काव्य कृति "देवीस्तोत्रपीठम्" का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे बताया गया कि इस पुस्तक में उत्तराखण्ड हिमालय के शाक्त-सिद्धपीठों, तीर्थ एवं मन्दिरों का उल्लेख संस्कृत भाषा में प्रभावपूर्ण तरीके से किया गया है। पुस्तक का प्रारम्भिक खण्ड 'शक्ति' की स्तुतिरूप में आबद्ध है। द्वितीय एवं तृतीय खण्ड पीठ एवं तीर्थों से सम्बन्धित है। पुस्तक सरल संस्कृत में रची गई है और उत्तरांचल की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा से जुड़ी हुई है।

मैं इनके इस कार्य के लिए अपनी शुभकामनाओं प्रेषित करता हूँ।

(नित्यानन्द स्वामी)

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निष्क'

मंत्री

विद्य, व्यापार कर एवं चिकित्सा विभाग



उत्तरांचल शासन

विधान सभा उत्तरांचल

देहरादून-248001

दूरभाष क्रमांक : 677088

फैक्स : 677988

सी० एच० : 216

बादावत : 712088

दिनांक 20.5.2007

-: शुभ सन्देश :-

यह उत्पन्न हर्ष का क्षण है कि डॉ० मनोहर जुरान द्वारा त्रिकोणान्दिता जन्माता भावती दुर्गा की स्तुति तथा उत्तराखण्ड में स्थित स्थलों की भक्तिधारा में गेय, सन्दोब, सरल एवं सुबोध संस्कृत काव्यमयी भाषा में गुम्फित कर विद्वत्पत्रों एवं जनताधारण के लिए तृप्ति किया गया है। "देवीस्तोत्रपीठम्" नामक उनका यह काव्य स्वचन्द्रवृत्ति में रचित हीमाली अक्षरी ॥280॥ श्लोकों में, स्तुति, एवं तीर्थ, इन तीर्थस्थलों में आबद्ध है। काव्य में उत्तराखण्ड के उन सभी प्राचीन शाक्त-पीठों का वर्णन है, जिनका उल्लेख पुराणों एवं तंत्र-ग्रंथों में है।

डॉ० जुरान की यह पावनकृति उत्तम एवं सराहनीय है। मैं इस पवित्र कार्य हेतु अपनी हार्दिक शुभ कामनायें प्रेषित करता हूँ।

॥ रमेश पोखरियाल 'निष्क' ॥

डॉ० रमेश पोखरियाल जुरान
उपाचार्य संस्कृत,
हेनोबो गढ़वाल विश्वविद्यालय,
परिसर बादगाही धौल,
टिहरी गढ़वाल।

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर (गढ़वाल) उत्तरांचल

HEMWATI NANDAN BAHUGUNA GARHWAL UNIVERSITY

SRINAGAR (GARHWAL) - 246174 UTTARANCHAL

Prof. P.S. SAKLANI

Vice-Chancellor

प्रो० पी० एस० सकलानी

कुलपति



Gram : "Unigarh"

Phone : 01388 - 52167 - Office

- 52168 - Resi.

01388 - 52174 - Fax

E-Mail : Vc@hnbguwren.nic.in

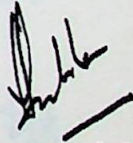
Ref.No. vc/2001/

Dated : 9/6/2001

" संका "
=====

उत्तरांचल में संस्कृत काव्य सूत्र की परम्परा प्राचीन है। यह उक्त है कि इस परम्परा में गतिरोध भी उत्पन्न होता रहा है। यही कारण है कि वर्तमान में संस्कृत रचनाएं कम ही देखने को मिलती हैं। हर्ष का विषय है कि गढ़वाल विश्वविद्यालय के शिक्षक डॉ. एम. स्म. जुगराज द्वारा संस्कृत भाषा में "देवीस्तोत्रपीठम्" काव्य की रचना की गई है। यह पुस्तक उत्तराखण्ड की धार्मिक परम्परा की एक कड़ी है। इस काव्य में माँ भगवती की स्तुति के साथ-साथ उत्तराखण्ड के लगभग सभी शक्तिपीठ, तीर्थ एवं मंदिरों का वर्णन है, जिससे यह रचना एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक दस्तावेज बन गई है।

इस हेतु मैं डॉ. जुगराज को शुभकामनाएँ देता हूँ।


प्रो. एस. सकलानी ।

संदेश

संस्कृत वा मय में भक्ति एवं स्तोत्र काव्य सृजन की परम्परा अतिप्राचीन है। वेद-मंत्रों से लेकर पौराणिक एवम् अर्वाचीन ग्रंथ भी इस विधा के साक्षी हैं। ऋषियों, कवियों तथा विद्वानों द्वारा अलौकिक ज्ञान-पुंज के रूप में प्रणीत यह धारा, कालान्तरवर्ती भौतिक परिवेश में किञ्चित् हासो-मुख अवश्य हुई किन्तु ब्रह्म एवं आत्मा का शाश्वत् सम्बन्ध किसी न किसी रूप में स्तुति एवं भक्तिकाव्य का अक्षुण्ण स्रोत बना रहा। भारतीय संस्कृति का महानतम पृष्ठ महाहिमालय का यह मध्यवर्ती प्रदेश इस परम्परा का ज्वलन्त प्रमाण है।

वर्तमान समय में डॉ. एम.एल. जुगराण द्वारा उत्तराखण्ड के धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में 'देवीस्तोत्रीठम्' काव्य की रचना सरल एवं सुबोध संस्कृत में की गई है। मधुर, गेय एवं स्वतंत्र छन्द में लिखी गई यह कृति, स्तुति, पीठ तथा तीर्थ एवं मंदिर इन तीन खण्डों में विभक्त है। तीर्थयात्र, पर्यटन एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में अध्येताओं के लिए यह ग्रंथ उत्तरांचल की कृतियों में महत्वपूर्ण है। काव्य में डॉ. जुगराण की सात्विक भावना, सीधा-साधा कवित्व एवं विद्वता दर्शनीय है। जुगराण मेरे परम प्रिय शिष्य हैं। उनकी इस कृति से मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

प्रोफेसर रामप्रताप तिवारी

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर

Truth is to be known and not believed on authority. - SWAMI RAM TIRTH
सत्य से बड़कर कोई धर्म नहीं। - स्वामी रामतीर्थ



फोन : 01376-8-4370

फैक्स : 01376-32233



स्वामी रामतीर्थ राष्ट्रीय स्मारक समिति (रवि०)

(सोसाइटी-रजिस्ट्रेशन अधिनियम संख्या 21, 1860)
(Registered Under Societies Act XXI of 1860)

महामण्डलेश्वर स्वामी ठा. श्यामसुन्दरदास
अध्यक्ष

रत्नचन्द्र पेंडूली
कार्यकारी अध्यक्ष

अहमदाबाद मोहल्ला

पुण्याई दिहरी

जिला दिहरी मद्रास (हिमालय)

उत्तरवर्त प्रदेश पिन-249001

पत्रांक :

दिनांक 8.6.2001

संदेश

मुझे हे. न. व. गढ़वाल विररविद्यालय, परिसर बादशाहीघौल के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. एम. एल. जुगराण की नव-सृजना 'देवोस्तोत्रपीठम्' देखने का अवसर मिला है। पुस्तक में देवी की भव्य स्तुति होने के साथ-साथ उत्तराखण्ड के अनेक शाक्त-सिद्धपीठों, तीर्थ एवं मंदिरों का परिचयात्मक एवं माहात्म्यपरक वर्णन निःसन्देह सरल एवं सुबोध संस्कृत काव्य-धारा के माध्यम से प्रशंसा के योग्य है।

लम्बे अन्तराल के बाद इस पवित्र भूमि में डॉ. जुगराण ने यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कर निश्चित तौर पर अपनी काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया है। उनको यह काव्य-सृजना बहुत सीधी-साधी एवं भक्तिपरक है। कृति को सफलता के लिए मेरी शुभ-कामनाये प्रेषित हैं।

रत्नचन्द्र पेंडूली
(सचिद्वानन्द पेंडूली)

संदेश

डॉ. जुगराण की कृति 'देवीस्तोत्रीठम्' देवी की स्तुति तथा मध्य हिमालय (उत्तराखण्ड) के शाक्त-सिद्धपीठों एवं तीर्थों (मंदिरों) से संबद्ध है। यह काव्य 'स्वच्छन्दवृत्तिका' में आबद्ध सरल एवं सुबोध संस्कृत में रचित है। भाषा में भक्ति का मधुरतम समावेश है। उत्तराखण्ड की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के परिपेक्ष्य में यह एक शोधपरक अद्भुत कृति है।

श्रीमती (डॉ.) इन्दिरा जुगराण
संस्कृत विभाग,
राजकीय अम्बेडकर महाविद्यालय
ऊँचाहार, रायबरेली, उ.प्र.

शुभकामना

स्त्री-वाची शब्दों से युक्त, विशेषण परक, प्रायः ग्यारह मात्रा के स्वछन्द छन्द में रचित 'देवीस्तोत्रपीठम्' डॉ. मनोहर लाल जुगराण, डी.लिट्, की मौलिक काव्यमय रचना है जिसकी प्रेरणा उन्हें अन्तःकरण से ही मिली प्रतीत होती है। उनकी इस रचना की हर कड़ी का मैं सुयोगवश साक्षी रहा हूँ।

देव-भूमि के नाम से विश्रुत केदारखण्ड और कूर्मांचल में स्थान-स्थान पर प्रसिद्ध शक्ति-पीठ एवं मंदिर हैं जहाँ माँ भगवती विविध नाम एवं रूपों में विद्यमान् हैं। 'देवीस्तोत्रपीठम्' में माता के विभिन्न नाम व उनसे सम्बन्धित मंदिरों का भक्तिमय उल्लेख है। यह रचयिता के विशद ज्ञान का परिचायक है।

कवि ने मंत्ररूप सरीखे लघु श्लोकों की रचना की है। श्लोक गेय हैं। श्लोकों में प्रयुक्त भाषा सरल है। अतः जन साधारण भी उनका आनन्द ले सकता है। 'देवीस्तोत्रपीठम्' का स्तुति खण्ड नियमित पूजा-अर्चना में प्रयोग किया जा सकता है।

राकेश चन्द्र नौटियाल
शिक्षा विभाग
हे.न.व.गढ़वाल विश्वविद्यालय
बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल,
उत्तरांचल

प्राक्कथन

विराट् सृष्टि परमपिता परमेश्वर की महानतम एवं अद्भुत कृति है। इसमें अनन्त इहलौकिक तथा पारलौकिक शक्तियों की परिकल्पना सन्निहित है। सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी एवम् आकाश आदि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इन सभी में एक सर्वोपरि मातृशक्ति की अवधारणा वेदनिष्ठ एवं शास्त्र-सम्मत है। प्राचीन ऋषियों ने इसी शक्ति को वाक्, सरस्वती, हैमवती, सती, उमा, पार्वती, अंबिका, दुर्गा, गौरी, कालिका, चण्डी तथा माहेश्वरी आदि अनेक नामों से सम्बोधित किया है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने ऊर्जा के क्षेत्र में अणु, परमाणु तथा नाभिकीय जो भी शक्तियाँ प्राप्त की हैं, वे वेदनिष्ठ महाशक्ति की लेशमात्र हैं। चराचर विश्व में जो कुछ भी विद्यमान है तथा इससे परे पारलौकिक सत्ता के रूप में जो निर्गुण, निराकार परब्रह्म है वह सभी इस महाशक्ति से किसी न किसी रूप में सम्बद्ध है। यही वेद शास्त्रों की 'ओंकार' या प्रणवा शक्ति है, जो अनादि एवं चिरन्तन है। इसी का साक्षात्कार प्राचीन ऋषियों ने वर्षों तप में तपने के परिणामतः अलौकिक ज्ञान-पुंज के रूप में प्राप्त किया था। यही ज्ञान सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किये हुये है तथा सम्पूर्ण वेद शास्त्र इसी के परिणाम हैं।

कवि एवं काव्यत्व की भावना से दूर किंकर्तव्यविमूढ प्रथम दृष्टया काव्य करना मेरा लक्ष्य नहीं था किन्तु घट- धट में व्याप्त माँ भगवती की असीम कृपा से ही मैं इस पुनीत कार्य में प्रवृत्त हुआ हूँ। सहसा हृदय में माँ की ममतामयी भक्ति उमड़ पड़ी। मातृ-स्नेह के आँसू छलक पड़े और इसी भावना को माँ का अशीष एवं अपना सौभाग्य मानकर इस काव्य रचना में प्रवृत्त हुआ। काव्य का विषय भी यकायक बन पड़ा "देवीस्तोत्रपीठम्"।

सत्यं शिवं सुन्दरं से अनुप्राणित माँ जगदम्बा इस सृष्टि की सृजन् पालन और संहरणन की आद्योपान्त स्वामिनी है। वेदों से लेकर पुराणों तक शक्ति माहात्म्य ही सर्वोपरि है। अतएव नये सिरे से कुछ कह पाना माँ की कृपा विना संभव नहीं था। अस्तु विषय-बोध माँ की ही अनुकम्पा है।

त्रिलोकी में माँ के सहस्रों 'दिव्यपीठ' हैं किन्तु इन सभी पीठों का वर्णन इस कृति में किया जाना सम्भव नहीं था। अस्तु सुविधा की दृष्टि से इस रचना को स्तुति, पीठ एवं तीर्थ (मंदिर) इन तीन खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड में देवी की स्तुति एवं महिमा का गान है, द्वितीय खण्ड में उत्तरांचल के शाक्त-पीठों का रोचक वर्णन है तथा तृतीय खण्ड मध्यहिमालय की स्वर्ग भूमि में स्थित तीर्थ एवं मन्दिरों के परिचयात्मक एवं माहात्म्यपरक वर्णन से सम्बद्ध है।

पुराणों के अनुसार भारतवर्ष की उत्तरदिशा में स्थित महाहिमालय मानस, केदार, नेपाल, जालन्धर और कश्मीर इन पाँच खण्डों में विभक्त है। इनमें मानस (कुमाँऊ) और केदार को संयुक्त रूप से उत्तराखण्ड कहा जाता है। प्राचीन शास्त्रों में वर्णित यह 'स्वर्गभूमि' वर्तमान उत्तरांचल राज्य का प्रमुख हिस्सा है। अनादि काल से यह क्षेत्र शिव एवं शक्तिमयी है। उपनिषदों में वर्णित 'ब्रह्मवादिनी उमा' हिमवती इसी प्रदेश की मूलवासिनी हैं, जो आज भी सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में नंदा देवी के नाम से घर-घर में पूजी जाती हैं। पवित्र 'सती' आख्यान भी उत्तरांचल की ही पावन धरा (हरिद्वार) से सम्बद्ध है।

प्राचीन तंत्र ग्रंथों में शाक्त-पीठों की दृष्टि से उत्तराखण्ड का केदार क्षेत्र-उर्वशी, बगला, कमला, चन्द्रवदनी तथा महत्कुमारिका इन पाँच भागों में विभक्त है। 'उर्वशी' क्षेत्र बदरिकाश्रम से लेकर केदारनाथ एवं रुद्रप्रयाग तक, बगला क्षेत्र रुद्रप्रयाग से लेकर यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, उत्तरकाशी, लम्बगाँव, टिहरी तथा मसूरी पर्यन्त, 'कमला क्षेत्र' रुद्रप्रयाग से लेकर श्रीनगर, कोटद्वार, लैन्सडाउन, सतपुली, नीलकंठ, पौड़ी, शवधियारखाल तक, 'चन्द्रवदनी' क्षेत्र कांडीखाल से लेकर बागीगाँव, देवप्रयाग, ब्रह्मपुरी एवं मुनिकीरेती तक तथा 'महत्कुमारिका' क्षेत्र कुंजपर्वत (कुंजापुरी) से लेकर ऋषिकेश, वीरभद्र, हरिद्वार, ज्वालापुर, कनखल, देहरादून एवं कालसी पर्यन्त विस्तृत माना गया है। इन सभी क्षेत्रों में अनेक शाक्तपीठों की स्थिति है। इन पीठों का उल्लेख प्राचीन शास्त्रों एवं तंत्र-ग्रंथों में प्राप्त होता है। अस्तु इस पुस्तक के 'पीठखण्डम्' में वर्णित उत्तराखण्ड के सभी शाक्त-पीठों का उल्लेख निम्न तालिका-1 में दृष्टव्य है-

तालिका - 1

देवीस्तोत्रपीठम् में वर्णित उत्तराखण्ड के शाक्त- सिद्धपीठ

क्र.सं.	नाम	स्थान/जनपद	संदर्भ
1.	नंदादेवी	नंदपर्वत/चमोली	केदारखण्ड पुराण - 81.29
2.	विशालाक्षी	बदरिकाश्रम/चमोली	केदारखण्डस्य सिद्धपीठानां सर्वेक्षणात्मकमध्यनम् पृ. 18
3.	उर्वशी	बदरिकाश्रम/चमोली	देवी भागवत् 7.30.79
4.	कामुकी	गन्धमादन/चमोली	संदर्भ 2, पृ. 18 तथा देवी भाग.
5.	विश्वकामा	उत्तरमानस/तिब्बत (मानसरोवर)	संदर्भ 2, पृ.18, देवी भाग.
6.	कुमुदा	दक्षिणमानस/तिब्बत (मानसरोवर)	संदर्भ 2, पृ.18 तथा देवी भाग.
7.	गौरी	मानसरोवर/तिब्बत	संदर्भ 2, पृ.18 तथा देवी भाग.
8.	वीरेशानी	ज्योतिर्मठ/चमोली	चूडामणितंत्रम्, संदर्भ 2, पृ. 18
9.	पर्णखंडासना	ज्योतिर्मठ/चमोली	संदर्भ 1, 58.36
10.	रणमण्डनेश्वरी	ज्योतिर्मठ/चमोली	संदर्भ 2, पृ. 26
11.	भीमा	मानसरोवर/तिब्बत	कुंजिका तंत्रम्, संदर्भ 2, पृ. 20
12.	ललिता	ललितांग नालाचट्टी/रुद्रप्रयाग	कुंजिका तंत्रम्, पटल 7.25
13.	सन्मार्गदायिनी	केदारनाथ/रुद्रप्रयाग	देवी भागवत् 7.30.60
14.	शाकम्भरी	शाकपर्वत/रुद्रप्रयाग	संदर्भ 1, 186.3
15.	गौरी (पार्वती)	गौरीकुण्ड/रुद्रप्रयाग	संदर्भ 1, 186.3
16.	विमुक्तिदा	गौरी-अलकनंदा संगम चमोली	देवी भाग. संदर्भ 2, पृ. 26
17.	कालिका	कालिमठ/रुद्रप्रयाग	संदर्भ 1, 85.81
18.	माहेश्वरी	तुंगनाथ/रुद्रप्रयाग	संदर्भ 2, पृ. 21
19.	सुरेश्वरी	ऊखीमठ/रुद्रप्रयाग	केदारखण्ड पुराण एवं केदारखण्ड तीर्थ-यात्रा पृ. 48
20.	कामेश्वरी	कामपर्वत/टिहरी	संदर्भ 1, 44.11
21.	इन्द्रासना	विनकर/टिहरी	वही. 195.21
22.	छिन्नमस्ता	विनकर क्षेत्र/टिहरी	वही. 195.21

23.	कूर्मासना	कूर्मपर्वत/टिहरी	देवलगढ़ के धार्मिक स्थानों का सर्वेक्षण, पृ. 187
24.	बगलामुखी	विनकर/टिहरी	संदर्भ 1, 45.1
25.	हरियाली देवी	हरिपर्वत/पौड़ी	संदर्भ 23, पृ.187
26.	बर्सुडी (दयूराड़ी) देवी	बर्सुडी/पौड़ी	संदर्भ 23, पृ. 192
27.	धारीदेवी	कल्यासौड़/पौड़ी	संदर्भ 23, पृ.179
28.	गौरजापीठ	देवलगढ़/पौड़ी	कुजिकातंत्रम्, संदर्भ 2, पृ. 618
29.	राजराजेश्वरी	देवलगढ़/पौड़ी	संदर्भ 1, 186.4
30.	राजराजेश्वरी	राणीहाट/टिहरी	के.पु. एवं संदर्भ 2, पृ. 21
31.	श्रीयंत्र (राजराजेश्वरी)	श्रीक्षेत्र (श्रीनगर)/पौड़ी	संदर्भ 23. पृ. 172
32.	चामुण्डा	श्रीक्षेत्र (श्रीनगर)/पौड़ी	संदर्भ 1, 28.33
33.	महिषमर्दिनी	श्रीक्षेत्र/पौड़ी	वही. 186.3
34.	नगरासणी (इन्द्रासनी)	हरकण्डी, गोलक्षपर्वत/पौड़ी	चूडामणि तंत्रम्, संदर्भ 2, पृ.27
35.	कंसमर्दिनी	श्रीक्षेत्र/पौड़ी	संदर्भ, 88.23
36.	शीतला	भक्त्याना/पौड़ी	संदर्भ 23, पृ. 168
37.	छिन्नमस्ता	श्रीक्षेत्र/पौड़ी	चूडामणि तंत्रम्, संदर्भ 2, पृ. 27
38.	दीप्तज्वालेश्वरी (ज्वाल्पा)	नवलातट/पौड़ी	संदर्भ 1, 168.2
39.	कालिका	कयूरागली/पौड़ी	संदर्भ 23, पृ.225
40.	देवी	दीवागढ़ी/पौड़ी	संदर्भ 23, पृ.227
41.	भौनदेवी	हल्दूखाल/पौड़ी नैनीडाण्डा	संदर्भ 23, पृ.228
42.	कालिका (देवी)	देवीख्यात, मंजकोट/पौड़ी	संदर्भ 23, पृ. 128
43.	गुह्येश्वरी	शवधियारखाल/पौड़ी	संदर्भ 1, 174.4
44.	नंदभद्रेश्वरी	कोट-झांझण/पौड़ी	वही.175.1
45.	माहेश्वरी (सुरेश्वरी)	नीलकंठ/पौड़ी सुरकूट पर्वत	वही. 133.10
46.	चंद्रवदनी (भुवनेश्वरी)	चन्द्रकूट पर्वत/टिहरी	संदर्भ 1, 141.27
47.	रमणा(भूतेश्वरी)	देवप्रयाग/टिहरी	देवीभागवत 7.30.65

48.	विकृताख्या	गर्दभासुर पर्वत/टिहरी	कालिकोपपुराणम् अ.19
49.	रणमण्डना	गूलर (व्यासी)/टिहरी	संदर्भ 1, 89.40
50.	माहेश्वरी	गूलर/टिहरी	संदर्भ 19, पृ. 67
51.	जयन्ती (सुन्दरीदेवी)	ब्रह्मकूट पर्वत(ब्रह्मपुरी)/ टिहरी	संदर्भ 1, 137.2
52.	यवनेश्वरी (सुरखण्डादेवी)	योनिपर्वत/टिहरी	वही. 1, 132.7
53.	पार्वतीपीठ	गणेश-प्रयाग/टिहरी	संदर्भ 19, पृ.78
54.	दक्षिणकालिका	गणेश-प्रयाग/टिहरी	वही. पृ.75
55.	शीतलादेवी	गणेश-प्रयाग/टिहरी	वही. पृ. 75
56.	राजराजेश्वरी	गणेश-प्रयाग/टिहरी	वही. पृ. 78
57.	पुष्टि	देवदारुकवन/उत्तरकाशी	देवी भाग.तथा संदर्भ 2, पृ.20
58.	तुष्टि	देवदारुकवन/उत्तरकाशी	संदर्भ 19, पृ. 86
59.	कुंजापुरी (महत्कुमारिका)	कुंजपर्वत/टिहरी	के.पु. 140.1
60.	अनंगा	भरताश्रम ऋषिकेश/ देहरादून	देवी भाग. 7.30.76
61.	माहेश्वरी	कुब्जाप्रक/देहरादून- ऋषिकेश	के.पु. संदर्भ 2,पृ. 19
62.	मुण्डमालिनी	वीरभद्र/हरिद्वार	वही.108.25
63.	मनसादेवी	हरिद्वार	देवी भाग.9. 48. 13
64.	मायादेवी	हरिद्वार	संदर्भ 1, 118.106
65.	रतिप्रिया	चण्डीघाट/हरिद्वार	देवी.भाग. 7.30.66
66.	वैष्णवी	हरिद्वार	कुंजिका तं. संदर्भ 2,पृ.
21			
67.	माहेश्वरी	हरिद्वार	के.पु. एवं संदर्भ 2,पृ.
21			
68.	चण्डीदेवी	चण्डीपर्वत/हरिद्वार	के.पु. 79.18
69.	श्रद्धा (उग्रा)	कनखल/हरिद्वार	कुलार्णव तंत्रम् 1.1.7

इस तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि उत्तराखण्ड में शाक्त पीठों की स्थिति प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। 'देवीस्तोत्रपीठम्' में उक्त तालिका अंकित सभी पीठों का काव्यमयी वर्णन संक्षिप्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में हुआ है।

वस्तुतः देखा जाय तो अनेक शाक्त-पीठों की स्थिति होने पर भी यह भूमि शक्ति के सहस्रों तीर्थ एवं मंदिरों से भी अलंकृत है। इस काव्य के 'तीर्थखण्डम्' में शक्ति के अनेक ऐसे तीर्थ एवं मंदिरों का वर्णन हुआ है जो उत्तरांचलवासियों के धार्मिक जीवन की याथातथ्य झांकी प्रस्तुत करते हैं। तालिका-2 में इन सभी तीर्थ एवं मंदिरों को निम्नवत् अंकित किया गया है-

तालिका - 2

तीर्थखण्डम् में वर्णित उत्तराखण्ड के शाक्त-तीर्थ एवं मंदिर

क्र.सं.	नाम	स्थान/जनपद	संदर्भ
1.	मूर्तिदेवी	धर्मक्षेत्र-माण्डा ग्राम चमोली	गढ़वाल के प्रमुख तीर्थ, पृ.142 ग.वि.वि.प्रकाशन सं.6,1981
2.	लक्ष्मीधारा	बदरीनाथ, चमोली	कल्याण तीर्थीक, पृ.59, चतुर्थ संस्करण संवत् 2054
3.	अनुसूयातीर्थ	बदरीनाथ, चमोली	संदर्भ 2, पृ.59
4.	लक्ष्मीवन	माण्डा/चमोली	संदर्भ 2, पृ. 59
5.	श्री देवी	बदरीनाथ, चमोली	संदर्भ 2, पृ. 59
6.	भू देवी	बदरीनाथ, चमोली	संदर्भ 2, पृ. 59
7.	सरस्वती धारा	वसुधारा के समीप/ बदरीनाथ, चमोली	संदर्भ 2, पृ.60
8.	लक्ष्मी-मठ	बदरीनाथ/चमोली	संदर्भ 1, पृ. 145
9.	कालिका	सप्तश्रृंग पर्वत/चमोली	संदर्भ 2, पृ.58
10.	अनुसूयातीर्थ	ब्रह्मकुंड, बदरीनाथ/ चमोली	संदर्भ 2, पृ. 59
11.	देवी मंदिर	धारा के पास/चमोली	वही. पृ.58
12.	लातादेवी	भविष्य बदरी/चमोली	वही. पृ. 58
13.	पार्वती देवी	तपोवन, चमोली	केदारखण्डस्य सिद्धपीठानां सर्वेक्षणात्मकमध्यनम्, पृ.226
14.	अन्नपूर्णा	जोशीमठ/चमोली	संदर्भ 13, पृ. 226
15.	उमादेवी	कर्णप्रयाग/चमोली	संदर्भ 13, पृ.226
16.	नंदा देवी	नन्दप्रयाग/चमोली	संदर्भ 13, पृ.226
17.	नंदा देवी	नौटी/चमोली	संदर्भ 13, पृ.226
18.	अनुसूयादेवी	गोपेश्वर, मंडल मार्ग	संदर्भ 2, पृ. 57
19.	शक्ति मंदिर	गोपेश्वर/चमोली	संदर्भ 13, पृ.226

- | | | | |
|-----|------------------------------------|---|--|
| 20. | नवदुर्गा मंदिर
(पाँच मातृकायें) | केदारनाथ/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ.126 |
| 21. | गौरी-कुण्ड
(पार्वती मंदिर) | गुप्तकाशी के समीप
केदारखण्ड तीर्थयात्रा, | केदारखण्ड पुराण एवं
पृ. 58, 1988 |
| 22. | भू देवी | त्रियुगीनारायण/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 128 |
| 23. | श्री देवी | त्रियुगीनारायण/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 25 |
| 24. | सरस्वती-कुण्ड | त्रियुगीनारायण/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 128 |
| 25. | शाकम्भरी देवी
(शताक्षी देवी) | शुक्रपर्वत/रुद्रप्रयाग
त्रियुगीनारायण | केदारखण्ड पु. 46/1 |
| 26. | महिषमर्दिनी | त्रियुगीनारायण/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 13, पृ. 226 |
| 27. | देवी-पार्वती | गुप्तकाशी/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ.113 |
| 28. | कालीक्षेत्र | गुप्तकाशी/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ.113 |
| 30. | मातादेवी | नाला (गुप्तकाशी)/
रुद्रप्रयाग | संदर्भ 2, पृ. 55 |
| 31. | कालशिला | कालीमठ/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 119 |
| 32. | गौरी | कालीमठ/रुद्रप्रयाग | वही. पृ.119 |
| 33. | सरस्वती | कालीमठ/रुद्रप्रयाग | वही. पृ.119 |
| 34. | लक्ष्मी | कालीमठ/रुद्रप्रयाग | वही. पृ.119 |
| 35. | महिषमर्दिनी
देवी | मैखण्डा/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 120 |
| 36. | राजेश्वरी देवी | मैखण्डा/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 120 |
| 37. | कोटिमाहेश्वरी | मैखण्डा/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 120 |
| 38. | महिषमर्दिनी
देवी | फाटा(गुप्तकाशी)/
रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 120 |
| 39. | विन्ध्यवासिनी | फाटा/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 120 |
| 40. | उमादेवी | ऊखीमठ/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 125 |
| 41. | नवदुर्गा | ऊखीमठ/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 1, पृ. 125 |
| 42. | चामुण्डा | रुद्रप्रयाग | संदर्भ 13, पृ. 226 |
| 43. | कालिका देवी | किमोण धनपुर/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 13, पृ. 226 |
| 44. | उमादेवी | दूना/रुद्रप्रयाग | संदर्भ 13, पृ. 226 |
| 45. | छायादेवी | रुद्रप्रयाग | संदर्भ 13, पृ. 226 |
| 46. | ज्वालामुखी
मंदिर | देवदुंगा विनयखाल/
टिहरी | मध्यहिमालय का पवित्र
तपोधाम, सहस्रताल, पृ. 90 |
| 47. | कालिका | देवीग्राम हिन्दाव पट्टी/
टिहरी | |

48.	नंदा मंदिर	भेटी/टिहरी	वही. पृ. 85
49.	राजराजेश्वरी मंदिर	चूलागढ़/टिहरी	वही. पृ. 70
50.	दुध्याड़ी देवी	पौनाडाग्राम/टिहरी	मध्यहिमालय का पवित्र तपोधाम सहस्रताल, पृ.60
51.	भवानी देवी	चन्द्रापुरी/रुद्रप्रयाग	संदर्भ 13, पृ. 226
52.	दयूराड़ी देवी	कमोल्डी धनपुर/पौड़ी	देवलगाढ़ के धार्मिक स्थानों का सर्वेक्षण पृ. 197
53.	हरियाली देवी	हरिपर्वत/पौड़ी	वही. पृ. 187
54.	काली तीर्थ	डौणियोंखाल/पौड़ी	वही. पृ. 194
55.	चौसठ कालिका	महड़, दशनामकुटी/पौड़ी	वही. पृ. 190
56.	कालिका मंदिर	पौड़ीखाल/पौड़ी	वही. पृ. 183
57.	धारीदेवी	कल्यासौड/पौड़ी	वही. पृ. 179
58.	देवी मंदिर	शुक्रता/पौड़ी	वही. पृ. 178
59.	चन्द्रवदनी	बुघाणी/पौड़ी	वही. पृ. 182
60.	श्रीयंत्र	श्रीनगर/पौड़ी	वही. पृ. 172
61.	सीतादेवी	फलसाड़ी/पौड़ी	वही. पृ. 187
62.	कालिका	मुण्डनेश्वर	वही. पृ. 198
63.	देवी मंदिर	पल्ला बनेलस्यू/पौड़ी	वही. पृ. 204
64.	देवी मंदिर	जवाडा बनेलस्यू/पौड़ी	वही. पृ. 205
65.	देवी मंदिर	खोन बनेलस्यू/पौड़ी	वही. पृ. 206
66.	देवी मंदिर	घोड़ी बनेलस्यू/पौड़ी	वही. पृ. 207
67.	दुर्गा मंदिर	दुगड्डा/पौड़ी	संदर्भ 13, पृ. 226
68.	विजयादेवी	लैन्सडाउन/पौड़ी	संदर्भ 13, पृ. 226
69.	नवदुर्गा	पौड़ी/पौड़ी	संदर्भ 13, पृ. 226
70.	शक्ति	खाण्डयोसैण/पौड़ी	संदर्भ 13, पृ. 226
71.	मंगला देवी	अमालगाँव/पौड़ी	संदर्भ 13, पृ. 226
72.	कामदा	सतपुली/पौड़ी	संदर्भ 13, पृ. 226
73.	यमुना	यमुनोत्तरी/उत्तरकाशी	संदर्भ 21, पृ. 92
74.	दुर्गादेवी	खरसाली/उत्तरकाशी	संदर्भ 13, पृ.227
75.	गंगा देवी	गंगोत्तरी/उत्तरकाशी	संदर्भ 21, पृ. 126
76.	भवानी	गंगोत्तरी/उत्तरकाशी	संदर्भ 13, पृ. 227
77.	धर्मेश्वरी	हर्षिल/उत्तरकाशी	संदर्भ 13, पृ. 227
78.	चण्डिकादेवी	भटवाड़ी/उत्तरकाशी	संदर्भ 13, पृ. 227

79.	अम्बा मंदिर	उत्तरकाशी	संदर्भ 21, पृ. 111
80.	कुट्टी देवी	उत्तरकाशी	संदर्भ 21, पृ. 115
81.	कालिका	ज्योथ्याड़ा/उत्तरकाशी	संदर्भ 21, पृ. 102
82.	रेणुका देवी	उत्तरकाशी	संदर्भ 21, पृ. 117
83.	शक्ति	उत्तरकाशी	संदर्भ 21, पृ. 106
84.	उजैली देवी	उत्तरकाशी	संदर्भ 21, पृ. 116
85.	मैठाणा देवी	चौबटियाधार/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
86.	सहजादेवी	सिरवाड़ी बांगर/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 221
87.	शक्ति	घूड़ी वासर/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
88.	राजराजेश्वरी	लम्बगाँव, रमोली/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
89.	देवी	ऊण/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
90.	सर्वेश्वरी	लम्बगाँव/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
91.	देवी	सेमा भरदार/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
92.	नवदुर्गा	कवीलाखाल/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
93.	काली	डंगवालगाँव बणमा/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
94.	दक्षिण काली	सेमा बणमा/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
95.	चण्डीदेवी	सिल्ली सिलगढ/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 227
96.	नवदुर्गा	चाखचम्बा/टिहरी	संदर्भ 21, पृ. 67
97.	महासरस्वती	पाली चम्बा/टिहरी	संदर्भ 21, पृ. 69
98.	भैरवी	बग्धार चम्बा/टिहरी	संदर्भ 21, पृ. 68
99.	काली	गाजना, चम्बा/टिहरी	संदर्भ 21, पृ. 70
100.	कालेश्वरी	सुरखण्डा पर्वत/टिहरी	संदर्भ 21, पृ. 72
101.	त्रिगुणा देवी	पालकोट/टिहरी	संदर्भ 21, पृ. 86
102.	दुर्गा मंदिर	बछेलीखाल/टिहरी	संदर्भ 21, पृ. 107
103.	परादेवी	पंतगाँव, देवप्रयाग/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 228
104.	वनेश्वरी	पुंडलग्राम देवप्रयाग/टिहरी	संदर्भ 13, पृ. 228
105.	भद्रेश्वरी	कांडीखाल/टिहरी	संदर्भ 21, पृ.
106.	वागीश्वरी	बागी गाँव/टिहरी	संदर्भ 21
107.	दुर्गा	ऋषिकेश/देहरादून	संदर्भ 13, पृ. 228
108.	माहेश्वरी	मसूरी/देहरादून	संदर्भ 21
109.	महाकाली	कालसी/देहरादून	संदर्भ 21
110.	भीमेश्वरी	भीमगोडा/हरिद्वार	संदर्भ 13, पृ. 228
111.	महालक्ष्मी	ऋषिकेश	संदर्भ 13, पृ. 228
112.	महाकाली	कनखल	संदर्भ 13, पृ. 228
113.	भद्रकाली	कनखल	संदर्भ 13, पृ. 228

114.	नारायणी	हरिद्वार	संदर्भ 21, पृ.28
115.	सती कुण्ड मंदिर	कनखल/हरिद्वार	हरिद्वार दर्शन, पृ. 60
116.	शीतलादेवी मंदिर	कनखल/हरिद्वार	हरिद्वार दर्शन, पृ. 59
117.	गायत्री मंदिर	शांतिकुंज/हरिद्वार	संदर्भ पृ. 100
118.	गंगा मंदिर	कुशाघाट/हरिद्वार	संदर्भ पृ. 63
119.	वैष्णोदेवी मंदिर	हरि की पैड़ी/हरिद्वार	संदर्भ पृ. 65
120.	सतीघाट कनखल	कनखल/हरिद्वार	हरिद्वार दर्शन, पृ. 68
121.	नैनादेवी	नैनीताल (तल्ला)	नैथानी, शिव प्रसाद, उत्तराखण्ड के तीर्थ एवं मंदिर, पृ. 395-96
122.	नैनीताल(नैनीझील)	नैनीताल	वही. पृ. 396
123.	कालिका	गंगोलीहाट/रानीखेत	वही. पृ. 398
124.	देधुरा	चम्पावत/पिथौरागढ़	वही. पृ. 410-11
125.	कालिका	जागेश्वर/अल्मोड़ा	वही. पृ. 433
126.	चण्डीदेवी	जागेश्वर/अल्मोड़ा	वही. पृ. 433

इन तीर्थ एवं मंदिरों की स्थिति से यह स्पष्ट है कि उत्तराखण्ड देवी के अनेक महान तीर्थों एवं मंदिरों की पुण्यभूमि है, जिनके स्मरण मात्र से सम्पूर्ण पापों का क्षय हो जाता है। प्राचीन ऋषि-मुनियों से लेकर वानप्रस्थी, परिव्राजक, राजा, रंक तथा सामान्य गृहस्थों आदि सभी की युग-युग में यही कामना रही है कि उनके जीवन की अन्तिम घड़ियाँ उत्तराखण्ड में बीते। कालान्तर में इसी प्रवृत्ति ने इस क्षेत्र को देश के अन्य भागों से सांस्कृतिक सम्पर्क में बनाये रखा।

‘देवीस्तोत्रपीठम्’ की रचना में जो भी धार्मिक एवं सांस्कृतिक बहुविध सहयोग मुझे विज्ञानों से मिला है उनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं कैसे भूल सकता हूँ। प्रथम दृष्टया तो साक्षात् माँ भगवती ही इसकी साक्षी है, जिन्हें इस कृति में मेरा कोटिशः नमन् अर्पित है। तदनन्तर ‘मंत्रदृष्टा’ ऋषियों तथा शास्त्रवेत्ता मनीषियों को मैं स्मरण करता हूँ, जिनके अलौकिक ‘ज्ञानपुंज’ से यह सम्पूर्ण विश्व ‘आलोकित’ है तथा जो इस दिव्य संस्कृति के प्रणेता रहे हैं। स्वर्गभूमि उत्तराखण्ड तो स्वयं में नमन् के योग्य है ही, जहाँ कण-कण में माँ की सत्ता व्याप्त है। अनेक शाक्त-पीठ, तीर्थ एवं मंदिर इसके प्रमाण हैं। पर्वतवासियों का धर्म, दर्शन, जीवन एवं संस्कृति का दिव्य आकर्षण भी इस काव्य-योजना में निहित है। अतएव मैं अन्तःकरण की शुचि-वृत्ति से इन सबका सम्मान करता हूँ।

इस पुस्तक की रचना में विद्वत् वर्ग मेरा सदा सहायक रहा है। "नव गठित राज्य उत्तरांचल के प्रथम मुख्य मंत्री माननीय नित्यानन्द स्वामी जी द्वारा 'देवीस्तोत्रपीठम्' की पूर्णता एवं सफलता की मंगल कामना की गयी है। उनकी इस कामना हेतु मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा स्वयं में उच्चकोटि के कवि डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' माननीय वित्त मंत्री, उत्तरांचल शासन का स्नेह मुझे हमेशा ही मिलता रहा है। अपने व्यस्त कार्यक्रम में भी इस कृति की सफलता के लिए जो संदेश उनके द्वारा प्रेषित किया गया है, उस सबके प्रति मैं अतिशय कृतज्ञ हूँ।

हे. न. ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय के विद्वान् कुलपति प्रो. पी. एस. सकलानी जी के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञता-ज्ञापन करता हूँ जिन्होंने बहुमूल्य समय देकर इस कृति की सफलता के लिए स्नेह एवम् आशीषरूप संदेश देकर मुझे कृत्-कृत्य किया।

वन्दनीय गुरुदेव प्रो. आर.पी. तिवारी, विभागाध्यक्ष संस्कृत, गढ़वाल विश्वविद्यालय की कृपा तो सदा ही मेरे ऊपर बनी रही है। समय-समय पर दिये गये उनके अमूल्य सुझावों के प्रति मैं अतिशय कृतज्ञ हूँ। इस काव्य की सफलता हेतु प्रेषित शुभ-शंसा उनके स्नेह एवं गुरुत्व का ही परिचायक है।

श्री सच्चिदानन्द पैन्थूली, कार्यकारी अध्यक्ष, स्वामी रामतीर्थ राष्ट्रीय स्मारक समिति, टिहरी द्वारा इस कृति की सफलता हेतु प्रेषित संदेश जिस स्नेह से लिखा गया है, उसे व्यक्त कर पाने में मैं असमर्थ हूँ।

आदरणीय रघुनाथ बंधु जुयाल, अध्यक्ष, भा.ज.पा., वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली मण्डल देहरादून के द्वारा इस पुस्तक की रचना में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जो सहयोग एवं संबल मुझे प्रदान किया गया है, उसके प्रति मैं पूर्ण समर्पित भाव से कृतज्ञ हूँ।

शिशु विभु, नीति, निधि एवं सृष्टि ने इस अवधि में जो प्यार मुझे अपनी बाल-सुलभ वृत्तियों से दिया, वह अविस्मरणीय है।

श्रीमती (डॉ.) इन्दिरा जुगराण, संस्कृत विभाग, राजकीय अम्बेडकर महाविद्यालय, ऊँचाहार, रायबरेली, ने इस काव्य में वर्णित पीठ, तीर्थ एवं मंदिरों के माहात्म्य एवं संदर्भों के अनुशीलन में जो योगदान मुझे दिया वह प्रशंसा के योग्य है।

हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के उपाचार्य

श्री राकेशचन्द्र नौटियाल तथा डॉ. विनोद कुमार गुप्त, संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय चम्बा ने इस काव्य पर जो संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणियाँ दी हैं, निःसन्देह गरिमापूर्ण, सरल एवं स्वाभाविक हैं। मैं निर्मल हृदय से इनका स्वागत करता हूँ। श्री नौटियाल स्वयं कविहृदय हैं। इन्होंने इस काव्यधारा से विभोर होकर जो पंक्तियाँ प्रारम्भ में लिखी हैं सर्वथा इस काव्य की आत्मा का ही स्पर्श कर डालती हैं। इस महत्त्वपूर्ण टिप्पणी का आधार व्यक्त कर पाना मेरे लिये सम्भव नहीं है।

इस काव्य की रचना में मैं उन सभी मित्रों का भी आधार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा उत्साहवर्धन किया तथा इस कार्य को पूर्ण करने में अपना अमूल्य सहयोग दिया।

शुद्ध एवं उत्तम कम्प्यूटरीकृत टंकण कार्य हेतु मैं 'विनी कम्प्यूटर्स', बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल को बहुविध धन्यवाद देता हूँ।

सहृदयजन! दिव्यज्ञान अनन्त एवं चिरन्तन है। मानव बुद्धि अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुरूप उसकी अनुगामी है। वस्तुतः देखा जाय तो इस दीर्घा में देवी-कृपा ही सर्वोपरि है। इस कृपा की अनुकृति 'देवीस्तोत्रपीठम्' के रूप में परिलक्षित है।

- मनोहर लाल जुगराण

स्तुतिखण्डम्

सर्ववेदवन्दितां,
 ऋषिदेवनमस्कृताम् ।
 देवशक्तिसंयुतां,
 प्रणमामि अम्बिकां ॥

मूढतापकर्षिका,
 प्रज्ञताविवर्धिनी ।
 बुद्धिनिर्मलात्मिका,
 वाणिऽलंकरोति या ॥

त्वं हिण्यवर्णिका,
 विश्वकल्पधारिता ।
 रम्यवनाध्यक्षिका,
 देवदारुपुत्रका ॥

पौरुषी सुविक्रमा,
 दामिनीव भासिता ।
 नभस्चारिणी परा,
 दिग्विमोहिनी सदा ॥

यदुवंशसमुद्भवा,
 त्वं पुराणसम्मता ।
 तिमिरपंथदीपिका,
 महाकवीषु स्थिता ।।

छत्रधरा विश्वपा,
 मेघमालिनी सदा ।
 नारदविन्दुनिरुपमा,
 यज्ञरूपिणी विभा ।।

सर्वलोकभासिका,
 बीजरूपिणी सुधा ।
 संस्थिता पर्यरिचनी,
 चित्रमालभूषिता ।।

सर्वपापनाशिनी,
 गंगेवोद्धारिणी
 उज्ज्वला सुकर्मिका,
 लोकविश्रुता सदा ।।

विश्वश्रेयकल्पिता,
 देववृत्तिपावनी ।
 मनुजवृन्दपुष्पिता,
 प्राणिजनसमर्पिता । ।

त्वं अधर्मरोधिता,
 धर्मधारणी शुभा ।
 पौरुषं विवर्धिनी,
 अन्तर्बहिसंस्थिता । ।

मेदनी सुपोषिका,
 निर्मला सुकीर्तिदा ।
 त्वं भुजंगवेष्टिता,
 महेशपीठस्थिता । ।

शताक्षिणी सुहासिनी,
 सर्वलोकस्वामिनी ।
 देवमनुजवंदिता,
 लोकत्रयरक्षिता । ।

सर्ववेदप्रणता,
 ब्रह्मन्योतिपावका ।
 दिव्यज्ञानऽमृता,
 संतननसमागता । ।

परब्रह्महंसिका,
 निर्मला सुवाणिका ।
 सर्वसारमूलका,
 प्राणदाशिनी सुधा । ।

मंगला सुप्रेक्षिका,
 त्वं पर्जन्यवाहिनी ।
 सर्वतापहारिणी,
 प्रमोदति वसुन्धरा । ।

त्वं परात्मिका शिवा,
 कल्मषं विदारिता ।
 कल्पतरुविभूषिता,
 सर्वलोकपूजिता । ।

गंगलर्पदायिनी,
कामरूपचारिणी ।
गुणत्रयस्वामिनी,
विश्वसृष्टिकारिणी । ।

महाव्योमसंगता,
विश्वरूपलक्षिता ।
अमृतं विधारिका,
महाकालसेविता । ।

प्रचण्डतालौकिका,
विश्वदेविचण्डिका ।
गहारुरविमर्दिता,
सर्वदेवरक्षिता । ।

गुणत्रयविभाजिता,
प्रकृतिस्वरूपिका ।
सुसृजना सुरम्यता,
पंचभूतदर्शिता । ।

इन्दिरा सुभाविका,
 विभुपदावलोकिता ।
 सर्वनीतिसंगमा,
 नवनिधिर्प्रदायिका ।।

त्वं शिवात्मिका विभा,
 उडुनिभा सुदर्शनी ।
 विश्वदेववांछिता,
 सृष्टिभावमागता ।।

हिमाद्रिवत्सला महा,
 पार्वती सुमेधिता ।
 सर्वदेवपूजितं,
 पतिमहेश्वरं वरा ।।

तपोमूर्तिपाविनी,
 लोकधारिणी शिवा ।
 पुष्पकाण्डसंस्थिता,
 विश्वमूलशोभिता ।।

देवि! जाह्नवी सदा,
 दिव्यवृत्ति पावका ।
 अमृता जलात्मिका,
 गंगलर्विधायका । ।

मोहचक्रहारिणी,
 कर्ममूलनाशिनी ।
 संतमोक्षवोदिता,
 ब्रह्मपदऽलंकृता । ।

पारमार्थिका सती,
 जीवब्रह्मोक्ता ।
 ज्ञानयोगधर्मिका,
 त्वं षडारिभेदिका । ।

ब्रह्मवादिनी प्रभा,
 निर्विकाररूपिणी ।
 मोहवृत्तिनाशिका,
 मृत्युपाशमोक्षिता । ।

प्राणिहितविवर्धिता,
 सर्वलोकस्वागता ।
 सांख्ययोगमर्मिका,
 प्राणदायिनी सुधा । ।

चतुर्युगविधायिका,
 उडुपतिर्प्रभा सदा ।
 गुरुचरित्रप्रदायिनी,
 जयन्ती जगत्प्रिया । ।

त्वं त्रिलोकपूर्णमा,
 दिव्यभा सुरश्मिका ।
 तन्द्रहासिनी प्रदा,
 विश्वऽलौकिका छविः । ।

देवताधिरूपिणी,
 मंजुभाषिणी विभा ।
 निर्मलात्मिका सदा,
 सुरासुरनमस्कृता । ।

धन्यदोहिनी सदा,
 भूतलं प्रकाशिका ।
 विल्वपत्रपूजिता,
 पुण्यतीर्थसेविता । ।

सर्वयोगसिद्धिदा,
 सद्गुणर्विधायिका ।
 सर्वलोकस्वामिनी,
 हरिहरानुगामिनी । ।

महाचेतनाप्रदा,
 त्वं सनातनी प्रभा ।
 योगिभिः समादृता,
 ब्रह्मपदसुशोभिता । ।

दीनबंधुसेविता,
 दीनतानिवारणी ।
 विश्ववन्धुता मुदा,
 सर्वव्लेशहारिणी । ।

त्वं त्रिलोकसुन्दरी,
 राजिता सुकुन्तला ।
 प्रज्ञदृष्टिपावका,
 सर्वलोक साधिका । ।

मुक्तिपंथयोगिनी,
 धर्मवृत्तिपावनी ।
 भक्तिभावपूजिता,
 ज्ञानमार्गकेन्द्रिता । ।

विश्वरूपकल्पिता,
 शिवसनात्मिका सदा ।
 वज्रिणी अभेदिका,
 वामदेवपूजिता । ।

प्रभामण्डलावृता,
 त्वं चमत्कृतानना ।
 ब्रह्मयोगधारिणी,
 सर्वतापहारिणी । ।

दिव्यशस्त्रभूषिता,
सिंहवाहिनी सदा ।
वाञ्छितं प्रदायिनी,
सुकेदारवासिनी । ।

दर्पमूलनाशिनी,
मोहपाशभेदिनी ।
चन्द्रदर्शनी शुभा,
पतितपावनी महा । ।

निर्मला निरंजना,
विश्वरोमहर्षिणी ।
प्रभातेवारुणिमा,
तेजपुंजभासिनी । ।

कमलोद्भवसंस्तुता,
कल्पवृक्षशोभिता ।
संतचित्तदीपिका,
वन्दनी वसुन्धरा । ।

त्वं धरासुरम्यता,
वर्धिता सुवासिता ।
मातृका सुवत्सला,
देवितीर्थख्यापका । ।

मूर्तरूपकल्पिता,
विश्वधा प्रपूजिता ।
सिद्धपीठसंस्थिता,
कोटिजननमस्कृता । ।

विश्वदर्शनात्मिका,
त्वं हिमाद्रिवत्सला ।
किरातैः सुसेविता,
किन्नरीभिः गीयता । ।

नायिका अलौकिका,
सर्वसिद्धिदायका ।
आत्मरूपसंस्थिता,
सर्वजनसमाहिता । ।

गन्धर्वैः प्रपूजिता,
 यक्षराजस्वामिनी ।
 नन्दनात्मिका सदा,
 भक्तिभिः सुआगता ।।

सप्तस्वरऽलंकृता,
 गाननृत्यलास्यका ।
 नारदेन वंदिता,
 देविका महेश्वरी ।।

सहस्रनामऽर्चिता,
 दायिनी सुवाणिका ।
 भक्तिभावविह्वला,
 सर्वलोकनायिका ।।

हिमप्रदेशस्थिता,
 देवि! विश्वमोहिनी ।
 परं सत्यरूपिका,
 दिव्यपंथदीपिका ।।

साधिका सुवृत्तिका,
 सूर्यचन्द्रधारका ।
 बहुरूपचारिणी,
 धर्मशास्त्रसारिणी । ।

अंबिका सुधात्मिका,
 विश्वदेवि! पावका ।
 धर्मऽर्थमोक्षदा,
 महापंथदेविका । ।

तपोध्यानयोजिता,
 पुण्यपंथभूषिता ।
 विश्वदेवपूजिता,
 मानवी सुपोषिका । ।

दर्पवृत्तिनाशिका,
 कुत्सितं निवारणी ।
 अद्भुता सुभीमिका,
 विश्वदेवि चण्डिका । ।

विराद्धर्ममर्मिका,
 दिव्यसृष्टिरूपका ।
 दर्शना सुकर्मिका,
 जागृतिः विश्वेश्वरी ।।

मुण्डमालशोभिता,
 मुण्डमालिनी सदा ।
 कालिका वरं प्रदा,
 विश्वशूलनाशका ।।

कालकंठनीयुता,
 कालरूपधारिणी ।
 कालजिह्वासंयुता,
 गणेशगुहपूजिता ।।

त्वं अधर्मरोधिता,
 कुत्सितं निवारणी ।
 धर्मपंथशोभिता,
 महाकर्मयोगिनी ।।

साधिका सुवृत्तिका,
 सूर्यचन्द्रधारका ।
 बह्यरूपचारिणी,
 धर्मशास्त्रसारिणी । ।

अंबिका सुधात्मिका,
 विश्वदेवि! पावका ।
 धर्मऽर्थमोक्षदा,
 महापंथदेविका । ।

तपोध्यानयोजिता,
 पुण्यपंथभूषिता ।
 विश्वदेवपूजिता,
 मानवी सुपोषिका । ।

दर्पवृत्तिनाशिका,
 कुत्सितं निवारणी ।
 अद्भुता सुभीमिका,
 विश्वदेवि चण्डिका । ।

विराट्धर्ममर्मिका,
 दिव्यसृष्टिरूपका ।
 दर्शना सुकर्मिका,
 जागृतिः विश्वेश्वरी ।।

मुण्डमालशोभिता,
 मुण्डमालिनी सदा ।
 कालिका वरं प्रदा,
 विश्वशूलनाशका ।।

कालकंठनीयुता,
 कालरूपधारिणी ।
 कालजिह्वासंयुता,
 गणेशगुहपूजिता ।।

त्वं अधर्मरोधिता,
 कुत्सितं निवारणी ।
 धर्मपंथशोभिता,
 महाकर्मयोगिनी ।।

महामृत्युभेदका,
ब्रह्मदर्शनी विभा ।
मातृभावमागता,
सर्ववृद्धिकारिणी । ।

त्वं त्रिलोकसुन्दरी,
निश्छला सुपावनी ।
ब्रह्मिका सनातनी,
विश्वभा सुदर्शनी । ।

सृजिका सुभाषिता,
विराटरूपदर्शिता ।
पंचभूतस्थिता,
सर्वलोकनिर्मिता । ।

महाकाशशाब्दिका,
वायुरूपवेष्टिता ।
अग्निसमप्रचण्डता,
देवि! जलरसात्मिका । ।

विश्वमोहिनी सदा,
 आत्मरूपसंस्थिता ।
 चेतनालौकिका,
 ब्रह्मनादपावका । ।

प्रकृतिः सुव्यापका,
 सर्वलोकमापनी ।
 शक्तिरूपधारणी,
 जीवलोकपालिनी । ।

विश्वदेवसंस्तुता,
 त्वं परात्मिका शिवा ।
 सर्वतंत्रसेविता,
 महामंत्रपूजिता । ।

महायोगपीठिका,
 नादघोषमोदिता ।
 दुष्टजनविभंजनी,
 वज्रतुल्यघोरिणी । ।

अंबिका सुपालिनी,
 सर्वलोकधारिणी ।
 जन्मभूमिदायिनी,
 मातृरूपपावनी । ।

तुरीयपदसेविता,
 दिव्यलोकऽवधृता ।
 शक्तिदा विश्वम्भरा,
 सौख्यकारिणी सदा । ।

कल्पतरुसहोदरा,
 विश्वमूर्ति शक्तिदा ।
 ध्यानयोगपरिवृता,
 मोक्षदायिनी प्रभा । ।

अर्चिता सुभक्तिदा,
 दिव्यरूपमंडिता ।
 वंदनी सुवादिनी,
 धर्मवृत्ति पावनी । ।

मातृका सुवत्सला,
 सर्ववेदख्यापका ।
 ब्रह्मयोगभैरवी,
 त्वं सुधा परात्मिका । ।

श्रद्धाभक्तिसमृता,
 अर्थगौरवं प्रदा ।
 कामरूपमोक्षदा,
 सर्वशास्त्रविश्रुता । ।

स्वर्गलोकरक्षिता,
 देववृन्दपूजिता ।
 कृपाशीलकोमला,
 प्राणिधर्मपोषिका । ।

असुरराजवाधिता,
 इन्द्रपदसुरक्षिता ।
 भक्तिभावपूजिता,
 वांछितं वरं प्रदा । ।

विश्वरूपगन्धात्री,
 त्वं परं यशस्विनी ।
 तपः पूतपर्णवी,
 विश्वख्यातनिर्मला । ।

प्रलयमूलस्थिता,
 विश्वदेवप्रार्थिता ।
 सौम्यरूपधारिणी,
 दिव्यसृष्टिकारिणी । ।

सर्वरत्नभूषिता,
 वैभवं प्रदायिनी ।
 दीनजनसमर्पिता,
 आर्तनादमुक्तिदा । ।

कर्मवृत्तिशुद्धिदा,
 भाग्यवर्धिनी मुदा ।
 शिवगणैः विभूषिता,
 भासिता वसुन्धरा । ।

पुण्यदोहिनी प्रभा,
 सर्वजीवमोक्षिका ।
 कोटिपुंजदीपिका,
 सर्वयोगभूषिता । ।

क्षौमक्षीरऽलंकृता,
 पार्वती हिमोज्ज्वला ।
 ब्रह्मदेवसंस्तुता,
 विष्णुपदचमत्कृता । ।

चेतनाप्रदायिका,
 विश्वहितसमाहिता ।
 अर्चिता सुसंयता,
 महाकालशोभिता । ।

ज्ञानदीपहरितिका,
 विश्वबुद्धिवर्धिका ।
 तिमिररोधिता प्रभा,
 गूढताविमर्दिनी । ।

ऋतूरी सुवासिता,
 धूपदीपशोभिता ।
 घृतप्रियमोदिता,
 वेदमंत्रपूजिता । ।

महाकविविवक्षिता,
 सर्वसंतलोकिता ।
 विश्वबंधुपंथिका,
 सर्वकालपूजिता । ।

पंचरात्रमोदिता,
 स्वामिनी शुभाशया ।
 धनुर्वेदनिष्ठिता,
 विन्ध्यवासिनी सदा । ।

वाक्शक्तिभूषिता,
 ज्योतिपुंजदर्शना ।
 त्वं ऋतुप्रदायिनी,
 दीनतानिवारणी । ।

सुयोगकल्पसाध्वी,
ब्रह्मासत्यनिष्ठवी ।
विश्वधर्ममोदिता,
पारमार्थिका सती । ।

ब्रह्मायज्ञवेदिका,
त्वं परं विभूतिका ।
श्रेयपंथविश्रुता,
प्रज्ञताविशेषिका । ।

कालचक्रक्रमिका,
सर्वलोकपरिवृता ।
पुनर्जन्मवारिणी,
प्रभा त्वं सुवेदिका । ।

सुधा त्वं सनातनी,
विश्वरूपपावनी ।
दिव्यमंत्रपूतिका,
त्वं परा सुवृत्तिका । ।

दिव्यवाणि कोकिला,
 त्वं अमृतस्रोतिका ।
 कल्मषं विदारिता,
 सर्वशास्त्रसम्मता । ।

सामगानमोदिनी,
 साधुबान्धवी सदा ।
 विश्वयज्ञकल्पिता,
 सिद्धिसागराम्बरा । ।

वेदबोधकारिणी,
 ब्रह्मदेवभासिनी ।
 वेदमंत्रनिष्ठिता,
 ज्योतिर्लपपावका । ।

योगदर्शनी शुभा,
 सर्वलक्षणायुता ।
 परं सत्यरूपका,
 शोभना पराशिवा । ।

संशयं विनाशिका,
 आत्मनिष्ठयोगिका ।
 ब्रह्मज्योतिसंभवा,
 पराशक्तिर्पाविका ॥

त्वं शुची मनोवता,
 केन्द्रिता दयुलोकभा ।
 विश्वसेतुपंथिका,
 तारिका महेश्वरी ॥

सर्वकार्यसिद्धवी,
 चक्रवर्तिनां धुरी ।
 भव्यता वसुन्धरा,
 स्वस्तिका विश्वेश्वरी ॥

अंबिका मनोहरा,
 विश्वबन्धुता प्रभा ।
 दीपिका जुमेधिता,
 विश्वपातु सर्वदा ॥

पीठखण्डम्

स्वर्गभूमिपावका,
गंगाद्वारस्थिता ।
देववंदिता सती,
दक्षगृहे जन्मिता ।।

पितृयज्ञशोभिता,
देविकासनातनी ।
पश्य पत्योपेक्षिता,
सत्यात्मभरिमता ।।

पुनर्देविकाश्च सा,
विष्णुचक्रस्पर्शा ।
विश्वधा प्रकल्पिता,
सिद्धपीठसंस्थिता ।।

हिमसुता सुदर्शनी,
मातृका स्वरूपिका ।
ब्रह्मज्ञानऽमृता,
आत्मनिष्ठपावका ।।

नंदादेविऽलंकृता,
दिव्यपीठस्थिता ।
सर्वदेवभूषिता,
नंदपर्वते सदा । ।

आद्यतन सनातनी
पितृर्गृपूजिता ।
मोहनीमहोत्सवा,
राजजातख्यापका । ।

क्षौमक्षीरावृता,
शोभिता सहस्रधा ।
मातृभूमिवत्सला,
श्रद्धाभावपूजिता । ।

स्तोत्रमंत्रपावकैः ,
नृत्यगानवादनैः ।
डोलिस्थिता शिवा,
कोटिजननमस्कृता । ।

बदरीधामस्थिता,
 शुभ्रज्योतिर्पाविका ।
 निर्मला सुकान्तिदा,
 विशालाक्षी स्मृता ।।

विष्णुतीर्थव्यापका,
 तंत्रस्थिता सती ।
 गंगवीचिविलसिता,
 मुवित्तदायिनी सदा ।।

बदरीवनसमर्चिता,
 उर्वशी महेश्वरी ।
 विश्वभूषकाशिका
 धर्मवृत्तिपावका ।।

कीर्तिदा सुमंगला,
 देवमनुजवंदिता ।
 योगरूपचारिणी,
 कर्मज्योतिर्पावनी ।।

ऋषिजनैः समर्चिता,
 गंधमादने महा ।
 कामुकी सुख्यापका,
 मोदिता सुगन्धिभिः ।।

संतचित्तदीपिका,
 देवहंसशोभिता ।
 उत्तराभिमानसे,
 विश्वकामार्चिता ।।

कुमुदा सुख्यापका,
 दक्षिणाभिमानसे ।
 दिव्यपुष्पमंडिता,
 सर्वसिद्धदायिका ।।

ज्योतिर्मठे शोभिता,
 तपोलीनदेविका ।
 वीरेशानीष्टिका,
 कामना प्रदायका ।।

देविका पुनश्च सा,
 पर्णखण्डासना ।
 तंत्रग्रंथविश्रुता,
 भक्तिभावपूजिता । ।

मोदिता सुपूजिता,
 भव्यता दिगम्बरा ।
 पूतमंत्रस्वागता,
 वैभवं प्रदा सदा । ।

असुरवृत्तिनाशका,
 रणमण्डनेश्वरी ।
 पुराकालविश्रुता,
 दिव्यभावदर्शका । ।

ज्योतिर्मठे पूजिता,
 बहुविधा प्रकल्पिता ।
 देवतासुवन्दिता,
 दानवर्विमर्दिनी । ।

दिव्यस्वर्गमानसे,
गौरीवंदिता सदा ।
त्रिलोकसाररिमता,
ज्ञानपुंजपावका । ।

सर्वयोग सिद्धिदा,
सर्पमालवेष्टिता ।
संतजनसमर्चिता,
मंगलविधायका । ।

हिमाद्रयां सुकल्पिता,
मानसेऽपि पूजिता ।
भीमरूपदेविका,
महास्वर्गरिथिता । ।

त्वं हिमाद्रिवत्सला,
गणेशगुहपूजिता ।
शिवगणैः विभूषिता,
महाहिमालरिथिता । ।

ललितादेवी स्मृता,
ललितागणो सदा ।
नवविधा सुपूजिता,
भवितभावसंयुता । ।

देवीपूजनेरताः
अशनवृत्तिपावकाः ।
चैत्रमासपूजिता,
देविका सुरेश्वरी । ।

दिव्यपुत्र्यऽलंकृता,
सर्वलोकभासिता ।
केदारभूमिरिथता,
सन्मार्गदायिनी । ।

मोक्षपथदीपिका,
सहरत्रकल्परिथता ।
योगराशिभूषिता,
देवि! त्वं परात्मिका । ।

स्वामिनी त्रिलोकिका,
 शाक्रपर्वताश्रिता ।
 देवी शाकम्भरी,
 सर्ववैभवं प्रदा ॥

पूजिता विश्वम्भरा,
 सर्वजीवरक्षिता ।
 मातृवृत्तिपावनी,
 सौख्यकारिणी सदा ॥

निरुपमेय सर्वदा,
 प्रज्ञतास्वरूपिणी ।
 त्रिविधतापहारिणी,
 कर्ममूलनाशिनी ॥

सुकुन्दारपंथके,
 गौरिकुण्डसंस्थिता ।
 तिमिरमूलनाशका,
 गौरिपूजिता सदा ॥

दिव्यपंथसेतुका,
 सर्वयोगमूर्तिका ।
 विश्वनाथभामिनी,
 मोदिता वरं प्रदा ।।

महागंगशोभिता,
 विश्रुता विमुक्तिदा ।
 विष्णुतीर्थके सदा,
 संगमे सुख्यापका ।।

कालिका सुमंगला,
 निर्मला त्रिलोचना ।
 यज्ञपर्वताश्रिता,
 कालिमठे पूजिता ।।

भूमीयं पावका,
 सर्वतापनाशका ।
 स्वामिनी त्रिलोकिका;
 कालिका शुभं प्रदा ।।

ज्ञानदीपिका महा,
ब्रह्मदर्शनी शुभा ।
विश्वबन्धुता प्रभा,
परावृत्तिमोक्षदा । ।

मोदिता सुमंतकैः
यज्ञविधिसेविता ।
वेदगर्भनिष्ठिता,
मुक्तिपंथबोधिका । ।

बुद्धिवैभवं प्रदा,
त्वं समष्टिरूपका ।
कालिदासबोधिता,
मातृका स्वरूपिणी । ।

अष्टमूर्तिशोभिता
तुंगनाथ संस्थिता ।
पूजिता महेश्वरी,
तुषारराशिऽलंकृता । ।

त्वं हिमाद्रिज्योतिका,
ब्रह्मवर्तनी शिवा ।
कोटिदेवसेविता,
मातृरूपपूजिता ।।

कूर्मपर्वते महा,
देवी कूर्मासना ।
कूर्मरूपविष्णुना,
पूजिता सुमंत्रकैः ।।

देवी बगलामुखी,
विनकरे सुस्मृता ।
परिवृता सुसाधकैः
परास्वरूपसंस्थिता ।।

कामरूपचारिणी,
कामपर्वते सदा ।
दिव्यपीठभूषिता,
मनोवांछितं प्रदा ।।

स्वामिनी त्रिलोकिका,
 इन्द्रासना शुभा ।
 विनकरे सुपार्श्वके,
 मोदिता सुपीठके ।।

तत्र महातीर्थके,
 विश्वदेवसंयुता ।
 छिन्नमस्तका सदा,
 बहुविधा प्रकल्पिता ।।

वंदिता हरिपर्वते,
 हरियाली देविका ।
 सिद्धपीठसंस्थिता,
 महोच्चश्रृंगभूषिता ।।

घृतदुग्धपायसैः ,
 गंधपुष्पऽक्षतैः ।
 श्रावणे सुपूजिता,
 देविका सुरेश्वरी ।।

वसुंडी सुग्रामके,
हरियालीपार्श्वके ।
महादेवीपूजिता,
सिद्धपीठसंस्थिता ।।

धारिदेवी पावनी,
अलकनंदातीरके,
स्थिता सुख्यापका,
सिद्धपीठपावका ।।

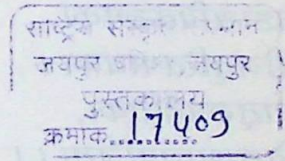
कालिका स्वस्वपिका,
वंदिता सुरेश्वरी ।
बहुविधिर्प्रसादकैः ,
श्रीफलैः सुमोदिता ।।

राजराजेश्वरी तु,
स्वर्णयंत्रनिष्ठिता ।
बावनी सुपूजिता,
देवलाश्रमस्थिता ।।

अलौकिका सुपीठका,
मनोहरा सुदृश्यकैः ।
कल्पिता सुमानवी,
राजवंशनृपकैः ॥

राजपदविभूषिता,
सर्वलोकवंदिता ।
कणकणेषु स्थिता,
स्वर्गभूमिमोदिता ॥

सत्संधपूजिता,
देविका महेश्वरी ।
श्रीयंत्रनिष्ठिता,
अलकनंदास्थिता ॥



नृपशीर्षऽलंकृता,
सैव विश्वमूर्तिका ।
राणीहाटस्थिता,
मनुजवृंदपूजिता ॥

विधिविधानपूजिता,
हन्ति कल्मषं सदा ।
कोटिजननमस्कृता,
भावगम्यदेविका ।।

महागौरी भूषिता,
पर्वते सुदेवले ।
महापीठख्यापका,
सर्वसिद्धिदायका ।।

महाशक्तिरूपका,
योगवृत्तिपावका ।
मातृरूपदेविका,
विश्वभावपूजिता ।।

पुराणेषु वंदिता,
ऋषिजनैः सुलोकिता ।
मंगला सुवृत्तिका,
गौरि! त्वं सनातनी ।।

सुगोलक्षमूलके,
कटकवतीतीरके ।
चामुण्डेयं पूजिता,
संस्थिता श्रीक्षेत्रके । ।

सेविता सुयज्ञकैः
पूजिता प्रसूनकैः ।
नारिकेलमोदिता,
मातृरूपपावनी । ।

अलौकिका वरं प्रदा,
महिषमर्दिनी सदा ।
मोदिता श्रीक्षेत्रके,
वंदिता गोलक्षके । ।

असुरवृत्तिभ्रंशिका,
प्राणिजनसमर्पिता ।
देवमनुजवंदिता,
सर्वलोकरक्षिका । ।

नवविधा प्रकल्पिता,
 गृहे-गृहे सुपूजिता ।
 सिंहवाहिनी सदा,
 देवलाश्रमस्मृता । ।

पावनीयं देविका,
 नगरासणिरूपिका ।
 उत्सवेषु पूजिता,
 सुगोलक्षपर्वते । ।

पुराकालपूजिता,
 गौरजास्वरूपिका ।
 यज्ञकुण्डभूषिता,
 सुमाडिग्रामस्थिता । ।

देवी अन्नपूर्णा,
 मातृरूपवंदिता ।
 अलकनंदातीरके,
 अष्टावक्रमूलके । ।

सर्वलोकपालिनी,
 दीनहीनतारिणी ।
 जगद्गुरुवंदिता,
 देविकेयं पावनी । ।

सर्वलोकरक्षिका,
 अन्नपूर्णा शिवा ।
 महोत्सवेषु पूजिता,
 विश्वनाथसंयुता । ।

श्रीक्षेत्रविस्तृता,
 शीतला प्रकल्पिता ।
 पूजिता सुमेधिता,
 कष्टवारिणी सदा । ।

सर्वरोगमुक्तिदा,
 भक्तिभावपूजिता ।
 धूपदीपवासिता,
 मोदिता प्रसादकैः । ।

देवि! पापमोचिनी,
 कंसमर्दिनी सदा ।
 अलकनंदा पार्श्वके,
 इयं पीठपावका ।।

पूजिता सुदर्शना,
 यज्ञविधिर्पावना ।
 मनोवांछिताप्रदा,
 श्रीक्षेत्रवासिनी ।।

बहुविधा प्रपूजिता,
 चैत्रमासदेविका ।
 आश्विने सुपक्षके,
 मोदिता सुयज्ञकैः ।।

पुराकालविश्रुता,
 पीठेयं सुख्यापका ।
 सर्वसिद्धिदायका,
 नवनिधिविधायका ।।

देवीन्द्रासना सदा,
 विषापहारिणी महा ।
 पूजिता फलपुष्पकैः ,
 शीतलास्वरूपिका । ।

पुराणेषु ख्यापका,
 महाभवितदायका ।
 अन्त्यजार्चिता सदा,
 नीरक्षीरमोदिता । ।

देवी छिन्नमस्ता,
 श्रीमठे व्यवस्थिता ।
 अलकनंदाशोभिता,
 पुराकालस्थिता । ।

वर्तमानकाले तु,
 पीठेयं न लक्ष्यते ।
 अलकनंदाक्रोडके,
 जलसमाधिलीनता । ।

स्थिता गढजनपदे,
 पूजिता दुशान्तके ।
 कालिका वरं प्रदा,
 क्यूरागली पर्वते ।।

महापीठशोभिता,
 दिव्यश्रृंगस्थिता ।
 नवविधा प्रपूजिता,
 आश्विने सुपाक्षिके ।।

देविका महेश्वरी,
 दीवागढी शोभिता ।
 मोदिता प्रसादकैः ,
 भक्तिभावसंयुता ।।

चैत्रमासपूजिता,
 सहस्ररूपदेविका ।
 पूजिता सुमंत्रकैः ,
 यज्ञविधिर्पावकैः ।।

हलदूखालपूजिता,
 नैनीडांडारिथिता ।
 भौनदेवी विश्रुता,
 विश्वनाथसंयुता । ।

पुष्पिता सुभक्तिभिः ,
 भूसुरार्चिता सदा ।
 विश्वधर्मपावनी,
 कर्ममूलनाशिनी । ।

नवालिकातटे तु,
 स्थिता सुख्यापका ।
 दीप्तज्वालेश्वरी,
 सर्वतापनाशिका । ।

पुरावृत्तरख्यापका,
 दीप्तरूपदेविका ।
 सतीरूपपावका,
 अत्र तीर्थस्थिता । ।

पूजितानेकधा,
चैत्रमासदेविका ।
स्वागता वरं प्रदा,
त्रिलोकवंदिता सदा ।।

गढ़भूमिवंदिता,
मंजकोटसंस्थिता ।
कालिका सुख्यापका,
देवीख्यातस्थिता ।।

वनराजिमध्यगा,
देविका सनातनी ।
मातृरूपवंदिता,
मोदिता सुगंधिभिः ।।

पक्षिभिः सुगीयता,
किन्नरीभिः सेविता ।
बाँजबुराँसकाफलैः ,
शोभिता दिगम्बरा ।।

सम्मुखेव पावनं,
हिमकिरीटशोभिता ।
कोटिदेवऽलंकृता,
सहस्रभक्तपरिवृता ॥

भैरवसुवन्दिता,
नागराजसेविता ।
क्षेत्रपालरक्षिता,
देवीख्यातवासिनी ॥

ताम्राचलपर्वते,
सुस्मृता गुह्येश्वरी ।
पर्वणि सुपूजिता,
पापनाशिनी महा ॥

पुराकालदेविका,
सतीरूपपावनी ।
दक्षयज्ञऽनन्तरं,
अत्रैव गुह्यऽङ्गिका ॥

नन्दभद्रेश्वरी,
कोटक्षेत्रवर्तिनी ।
गढदीपिका महा,
झांझडे सुख्यापका ।।

महोच्चशृंगरिथता,
प्रकृतिस्वरूपिका ।
ढोलवादनैः सदा,
पूजिता सुवासरे ।।

कामगिरौपूजिता,
देविका सुरेश्वरी ।
नीलकण्ठविश्रुता,
मणिकूटस्थले ।।

विश्वधर्मपालनी,
कामेश्वरी विभा ।
महासृष्टिकारिणी,
अत्ररिथता सदा ।।

रमणा सुपूजिता,
 देवतीर्थख्यापका ।
 महापीठशोभिता,
 गंगतीरस्थिता । ।

रघुपतिसुवन्दिता,
 सहस्रदेवसेविता ।
 भक्तजनसमागताः
 अर्चयन्ति देविकाम् । ।

देविकेयं विश्रुता,
 भूतेश्वरी विभा ।
 भूसुरैः सुऽर्चिता ।
 कल्पितानेकधा । ।

विकृताख्या पूजिता,
 गर्दभासुरपर्वते ।
 देविपीठख्यापका,
 उच्चशृंगस्थिता । ।

सिद्धिदायिनी विभा,
 अत्र स्थिता सदा ।
 श्रद्धाभावपूजिता,
 वाञ्छिता वरं प्रदा ॥

महातीर्थगूलरे,
 रणमण्डना शुभा ।
 कालीरूपस्मृता,
 मंगलं प्रदा सदा ॥

अत्र स्थिता मुदा,
 त्रिलोकरव्यापका ।
 महाशिवास्वरूपिका,
 कामना प्रदायिनी ॥

ब्रह्मकूटपर्वते,
 नयन्ती सुनायिका ।
 सुन्दरी स्वरूपिका,
 शिवपुरी प्रपूजिता ॥

चन्द्रकूटपर्वते,
 दिव्यपीठशोभिता ।
 चन्द्रवदनी देविका,
 स्वर्गभूमिरिथिता ॥

देविकेयं पावनी,
 भुवनेश्वरी महा ।
 सर्वदेवऽलंकृता,
 मातृरूपवन्दिता ॥

सहस्रतीर्थपरिवृता,
 शोभिता सुपादपैः ।
 भैरवादि रक्षिता,
 हुणाकोटवन्दिता ॥

जनैः जनैः स्वागता,
 यज्ञहोमपावका ।
 पूजिता सुमंत्रभिः ,
 देविका शुभं प्रदा ॥

स्थिता यवनेश्वरी,
 योनिपर्वताश्रिता ।
 योगराशिभूषिता,
 सर्वसिद्धिदायका । ।

देवदारुशोभिता,
 दिव्यपुष्पमंडिता ।
 कोटिदेवपरिवृता,
 उच्चश्रृंगस्थिता । ।

धरास्वर्गकल्पिता,
 महापीठशोभिता ।
 अर्चिता विमुक्तिदा,
 षडरिपूविदारिता । ।

धूपदीपमोदिता,
 चुन्नरीभिः शोभिता ।
 श्रीफलैः सुपूजिता,
 स्वागता वरं प्रदा । ।

धनुषतीर्थस्थिता,
 पार्वती सुख्यापका ।
 महापीठशोभिता,
 वंदिता त्रिलोकिका । ।

श्रावणे सुऽर्चिता,
 चन्द्रवासरे शुभा ।
 विल्वपत्रपूजिता,
 विश्वनाथसंयुता । ।

गणेशप्रयागे तु,
 कालिका प्रपूजिता ।
 सुरसरिसुशोभिता,
 सौम्यपीठस्थिता । ।

दक्षिणपदविभूषिता,
 देविका सनातनी ।
 योगिनीऽलौकिका,
 सर्वसिद्धिदायनी । ।

शीतला सुमेधिता,
 पार्श्ववर्तिकालिका ।
 सर्वरोगमुक्तिदा,
 भक्तिभावपूजिता ॥

पतितपावनी सदा,
 कीर्तिदा समुज्ज्वला ।
 मूढताविनाशिनी,
 देवभूमिपावनी ॥

गणेशतीर्थस्थिता,
 वेश्वऽनन्तरूपका ।
 राजराजेश्वरी तु,
 शिववैभवं प्रदा ॥

राजवंशदेविका,
 पूजिता महोत्सवे ।
 ख्यापका त्रिलोकिका,
 वैभवं प्रदा सदा ॥

देवदारुकवने,
 पुष्टिस्थिता सदा ।
 महापीठशोभिता,
 वारणावते शुभा । ।

देविकेयं पावनी,
 अन्नपूर्णा विभा ।
 मोदिता सुभक्तिभिः ,
 विश्वनाथसंयुता । ।

तुष्टिरूपपावनी,
 सैव मुक्तिदायिनी ।
 विश्वभक्त्यापगा,
 कर्मवृत्तिपावका । ।

दर्शनालौकिका,
 निर्वाणपंथबोधिका ।
 दीनतानिवारणी,
 सर्वतापहारिणी । ।

स्मृता महत्कुमारिका,
 कुंजपर्वते महा ।
 दिव्यपीठशोभिता,
 त्रिलोकविश्रुता । ।

वनराजिमध्यगा,
 शोभिता सुपादपैः ।
 योगक्षेमदायिनी,
 तपः मूर्तिपावनी । ।

महामंत्रपूजिता,
 तंत्रनिष्ठिता सदा ।
 सर्वमंगलप्रदा,
 विश्वबन्धुता प्रभा । ।

सर्वलोकधारिणी,
 महाशक्तिपावनी ।
 यज्ञवृत्तिपुष्पिता,
 क्लेशहारिणी मुदा । ।

हृषीकेशसंस्थिता,
अनंगा महेश्वरी ।
भरताश्रमवन्दिता,
त्रिलोकविश्रुता । ।

पूजिता फलं प्रदा,
देवीमूर्ति पावका ।
चराचरेषु व्यापका,
सर्वलोकरक्षयापका । ।

चन्द्रभागासंगमे,
यत्र गंगा पावनी ।
शतरूपा व्यवस्थिता,
साधुभिः समर्चिता । ।

कुब्जाम्बके विश्रुता,
देविका माहेश्वरी ।
पतितपावनी सदा,
परामूर्ति पावका । ।

चण्डीघाटस्मृता,
 देविका रतिप्रिया ।
 सर्वदेवसेविता,
 विश्वमूलदेविका । ।

हरिद्वारख्यापका,
 यत्र गंगा पावनी ।
 वैष्णवी सुमंगला,
 सर्ववैभवं प्रदा । ।

स्मृता माहेश्वरी,
 स्वर्गद्वारस्थिता ।
 विश्वदेवऽलंकृता,
 सर्वलोकपावनी । ।

शिखरपादपावता,
 उच्चशृंगस्थिता ।
 महाचण्डी स्वर्गिका,
 गंगाद्वारशोभिता । ।

पुष्पफलैः अर्चिता,
 गन्धिना, सुमोदिता ।
 सर्वपापमोचिता,
 भवतवत्सला सदा ।।

कनखले सुख्यापका,
 श्रद्धापीठवंदिता ।
 उग्ररूपदेविका,
 विश्वधा प्रपूजिता ।।

देवीशाक्तपीठं,
 फलदायकं परं ।
 यस्य दर्शनादेव,
 क्षीयन्ते सर्वसंशयः ।।

तीर्थखण्डम्

बदरीधामस्थिता,
धर्मक्षेत्रपूजिता ।
मूर्तिदेवी विश्रुता,
गन्धद्रव्यमोदिता । ।

देवीकेयं पावनी,
गन्धमादने महा ।
सर्वदेवऽलंकृता,
विष्णुदेवपूजिता । ।

महाहिमाद्रिनिर्गता,
वारिरूपऽमृता ।
लक्ष्मीस्वरूपिका,
माणाक्षेत्रस्थिता । ।

धारेयं सुपावका,
मातृरूपनामका ।
स्नानपुण्यदायका,
सर्वपापनाशका । ।

अनुसूयावंदिता,
बदरीधामसंस्थिता ।
त्रिदेवकृतपुत्रका,
तापसी शुचिवता ॥

भोजतरुसुशोभिता,
गन्धमादने विभा ।
अरण्यदेविका महा,
लक्ष्मीवने सदा ॥

श्रीदेवीवंदिता,
बदरीधामस्थिता ।
पूजितानेकधा,
मोदिता सुगन्धिभिः ॥

बदरीवनप्रपूजिता,
भूदेवीऽलंकृता ।
वंदिता विश्वम्भरा,
सौख्यकारिणी सदा ॥

लक्ष्मीप्रपूजिता,
 दिव्यमठसुशोभिता ।
 बदरीधामस्थिता,
 कोटिजननमस्कृता ॥

सप्तशृंगपर्वते,
 कालिका सुख्यापका ।
 गुरुगोविन्दपूजिता,
 देविकापुरातनी ॥

मोदिता सुगन्धिभिः ,
 पुष्पमंडिता सदा ।
 लोकपालस्थिता,
 रक्षिता महेश्वरी ॥

भविष्यबदरी स्थिता,
 लातादेवी पूजिता,
 अप्सराभिः सेविता,
 किन्नरीभिः गीयता ॥

तपोवनसुस्मृता,
 पार्वती सुमेधिता ।
 देवीतीर्थख्यापका,
 सर्वलोकव्यापका । ।

ज्योतिर्मठ प्रपूजिता,
 अन्नपूर्णा सदा ।
 देवि! त्वं विश्वम्भरा,
 सर्वलोकपालका । ।

तपोमूर्तिपावनी,
 ब्रह्मवादनी शिवा ।
 उमादेवी स्मृता,
 कर्णतीर्थस्थिता । ।

नंदप्रयागस्थिता,
 नंदादेवी पावका ।
 बावनीसुवंदिता,
 देवताभिः स्वागता

िंदादेवी मोदिता,
 रौटीग्रामसेविता ।
 पूजिता सुगन्धिभिः
 उत्रचामरैः सदा । ।

सर्वदेवसंयुता,
 महाशक्तिपूजिता ।
 पुराकालविश्रुता,
 गोपेश्वरसंस्थिता । ।

छायापथऽलंकृता,
 अनुसूयादेवी स्थिता ।
 गोपेश्वरमंडले,
 पूजितानेकधा । ।

सर्वकामनाप्रदा,
 सिद्धिदायनी महा ।
 पूजिता महोत्सवे,
 स्वर्गभूमिसर्वदा । ।

नवदुर्गा प्रकीर्तिता,
 केदारतीर्थस्थिता ।
 पूजिता महेश्वरी,
 हिमकिरीटशोभिता । ।

गौरीकुण्डसंस्थिता,
 पार्वतीप्रपूजिता ।
 सर्वलोकस्वामिनी,
 परामूर्तिपावनी । ।

त्रियुगीनारायणे,
 भूदेवीसंस्थिता ।
 मूर्तरूपशोभिता,
 महातीर्थपूजिता । ।

श्रीदेवीवंदिता,
 त्रियुगीसुख्यापके ।
 श्रद्धाभक्तिपूजिता,
 मोदिता सनातनी । ।

सरस्वतीसुवन्दिता,
 सर्वज्ञानसम्मता ।
 तिमिरपन्थदीपिका,
 त्रियुगीसुस्थिता ।।

अत्रैव ख्यापका,
 महिषमर्दिनी महा ।
 मोदिता प्रसादकैः ,
 शोभिता सुधूनीभिः ।।

देवीतीर्थपावका,
 गुप्तकाशीस्थिता ।
 धूपदीपपूजिता,
 देविका महेश्वरी ।।

कालीक्षेत्रस्मृता,
 गुप्तकाशीस्थिता ।
 देविका फलं प्रदा,
 कालीरूपपावनी ।।

गुप्तकाशीशोभिता,
नालाचट्टीरिथता ।
मातादेवी स्मृता,
वाञ्छिता वरं प्रदा ॥

मैखण्डासंस्थिता,
देवभूमिपावका ।
महिषमर्दिनी विभा,
पूजिता परम्परा ॥

मंगलविधायका,
राकेश्वरी महा ।
मैखण्डासंस्थिता,
सर्वलोकरक्षिता ॥

मैखण्डावासिनी,
कोटिमाहेश्वरी तु ।
त्रिलोकवन्दिता सदा,
सर्वपापनाशका ॥

मंगलप्रदायिनी,
 विघ्ननाशिनी महा ।
 कालीशिलापूजिता,
 कालीमठे शोभिता ।।

कालीमठसुस्थिता,
 महागौरीवन्दिता ।
 दुग्धपुष्पऽर्चिता,
 सर्वकामनाप्रदा ।।

तिमिरनाशिनी सदा,
 ज्योतिपुंजपावनी ।
 सरस्वती सुस्मृता,
 कालीमठप्रपूजिता ।।

अत्रैव तीर्थस्थिता,
 महादेवीरूपका ।
 लक्ष्मी सुरख्यापका,
 वैभवं प्रदायिनी ।।

फाटाग्रामस्थिता,
विन्ध्यवासिनी महा ।
पूजिता सनात्मिका,
सर्वलोकख्यापका । ।

असुरराजपुत्रिका,
उषादेवी विश्रुता ।
ऊखीमठप्रपूजिता,
महाश्रृंगस्थिता । ।

नवदुर्गा प्रकल्पिता,
सौम्यरूपपावका ।
ऊखीमठसुशोभिता,
सर्वलोकपूजिता । ।

रुद्रक्षेत्रस्थिता,
चन्द्रापुरीपावका ।
भवानीसुवंदिता,
सुरम्यतीर्थस्थिता । ।

मन्दाकिनी पाविनी,
 यत्र पापनाशिनी ।
 देविका वरं प्रदा,
 सर्वदेवऽलंकृता ॥

रुद्रप्रयागरिथता,
 चामुण्डालौकिका ।
 भवितभावपूजिता,
 सर्वलोकरक्षिता ॥

किमोणधनपुरे,
 कालिका सुरख्यापका ।
 रुद्रक्षेत्रभूषिता,
 महातीर्थस्थिता ॥

रुद्रतीर्थविश्रुता,
 दूनाग्रामस्थिता ।
 उमादेवीपूजिता,
 ब्रह्मवादिनी सदा ॥

छायादेवी स्थिता,
 रुद्रतीर्थपूजिता ।
 कोटिदेवपरिवृता,
 संतचित्तदीपिका । ।

विनयखालविश्रुता,
 देवदुंगरिथिता ।
 ज्वालामुखी पावका,
 तिमिरमूलनाशका । ।

हिंदालक्षेत्रस्थिता,
 दोणीग्रामपूजिता ।
 कालिंका महेश्वरी,
 ब्रह्मज्योतिर्पावनी । ।

बूढाकेदारस्थिता,
 भेरीग्रामशोभिता ।
 नन्दादेवी पावका,
 वावनी सरस्व्यापका । ।

सर्वदेवऽलंकृता,
 बालखिल्यपर्वते ।
 चूलागढप्रपूजिता,
 राजराजेश्वरी ॥

गोनगढसुपूजिता,
 पोनाडाग्रामस्थिता ।
 दुध्याडीसेविता,
 घृतदुग्धपायसैः ॥

सर्वकामनाप्रदा,
 द्यूराडीपूजिता ।
 महातीर्थस्थिता,
 कमोलीधनपुरे ॥

हरियालीपूजिता,
 नवासूग्रामस्थिता ।
 दिव्यशृंगवंदिता,
 धनपुरे सुविस्मृता ॥

डोंणियोंखालस्थिता,
कालीतीर्थभूषिता ।
वनराजिमध्यगा,
देविकेयं पावका ।।

दशनामकुटीस्थिता,
चौसठकालिका तु ।
सहस्रनामपूजिता,
मूर्तरूपदेविका ।।

कालिका शुभं प्रदा,
पौडीखालस्थिता ।
पूजितानेकधा,
छत्रचौवरैः सदा ।।

धारीदेवी विश्रुता,
कल्यासौडस्थिता ।
सिद्धपीठपावका,
सर्वलोकव्यापका ।।

शुक्रतासुपावका,
 देवीतीर्थाशोभिता ।
 भवतवत्सला विभा,
 अत्र स्थिता सदा । ।

बुघाणीधारस्थिता,
 सुरम्यशृंगपूजिता ।
 चन्द्रवदनी देविका,
 सर्वलोकनायिका । ।

देविका महेश्वरी,
 श्रीयंत्रनिष्ठिता ।
 सत्यसंधवन्दिता,
 श्रीक्षेत्रस्थिता । ।

अद्यापि शोभिता,
 देवीयंत्रपावका ।
 अलकनंदापरिवृता,
 शिलारूपस्थिता । ।

सितोनखसुपावके,
मनसारख्यापका ।
देवी सीतास्मृता,
फलसाडीसंस्थिता । ।

मुण्डनेश्वरपर्वते,
कालिका सुख्यापका ।
देविकेयं पाविका,
सुसंकल्पपूजिता । ।

वनराजिशोभिता,
देवीधारस्थिता ।
पल्लवाग्रामपूजिता,
देविकासनातनी । ।

त्रिलोकभूषिता,
पतितपावनी शिवा ।
देवीचौकस्थिता,
जवाडाग्रामस्मृता । ।

खोनमंदिरे शुभा,
बनेलरयूरिथता ।
देवीरूपपूजिता,
ढोलवादनैः सदा । ।

उच्चश्रृंगरिथता,
घीडीग्रामपूजिता ।
देविकामहेश्वरी,
धूपदीपमोदकैः । ।

वंदितात्रिलोकिका,
दुगड्डाक्षेत्ररिथता ।
दुर्गारूपरुमृता,
भवित्तभावपूजिता । ।

विजयादेवी रुमृता,
लैंसडाउनरिथता ।
सघनवृक्षपरिवृता,
शोभिता बुराँसकैः ।

नवदुर्गा विभूषिता,
 पौडीक्षेत्रविस्तृता ।
 विश्वधा प्रपूजिता,
 कोटिजननमस्कृता । ।

शक्तितीर्थपावका,
 खाण्डयोसैगरिथता ।
 पूजितानेकधा,
 चैत्रमासदेविका । ।

मंगलादेवी स्मृता,
 पैडूलरयूरिथता ।
 अमालगाँवपूजिता,
 श्रद्धाभवितसेविता । ।

कामदा वरं प्रदा,
 सतपुलीसुख्यापका ।
 पूजिता प्रमोदिता,
 परिवृता नवालिका । ।

वन्दरपूँछनिर्गता,
महाहिमालस्थिता ।
कालिंदी सुपावनी,
पुण्यधामविश्रुता । ।

विष्णुपदप्रपूजिता,
पतितपावनी महा ।
अमृतस्वरूपिणी,
सुरसरिसुपावनी । ।

महास्वर्गस्थिता,
गोमुखविनिर्गता ।
मंगलविधायका,
सर्वलोकोद्धारका । ।

भवानीप्रपूजिता,
गंगोत्तरीस्थिता ।
पूजिता वरं प्रदा,
पुत्रपौत्रकं सदा । ।

हर्षिले सुख्यापका,
 पुण्यदालौकिका ।
 वंदिता धर्मेश्वरी,
 मोदिता सुगन्धिभिः ।।

भटवाडीसंस्थिता,
 पण्डिका सुख्यापका ।
 देवीरूपपावका,
 वैभवं प्रदायका ।।

कलियुगे सुवंदिता,
 वारणावते महा ।
 अम्बादेवी स्थिता,
 विश्वनाथशोभिता ।।

महाशक्तिपावका,
 त्रिशूलरूपस्थिता ।
 सर्वलोकपूजिता,
 दिव्यशक्तिमूलका ।।

कालिका शुभं पदा,
 नोष्याडाविश्रुता ।
 दिव्यपदऽलंकृता,
 भगीरथीशोभिता । ।

उजैलीदेवी स्थिता,
 देववृक्षशोभिता ।
 उत्तराभिगामिनी,
 सुरसरिऽलंकृता । ।

कुट्टैदेवीस्थिता,
 सौम्यकाशीस्मृता ।
 दिव्यकांतिभूषिता,
 उच्चशृंगस्थिता । ।

वारणावतपर्वते,
 रेणुका सुस्थिता ।
 पंचकोशीपरिवृता,
 महाशृंगशोभिता । ।

मैठाणादेवी स्मृता,
चौबटियाधारस्थिता ।
लस्याग्रामशोभिता,
कामनाप्रदायका ॥

सिरवाडीबांगरे,
सुरम्यतीर्थस्थिता ।
सहजादेवी भूषिता,
मोदिता प्रसादकैः ॥

महाशक्तिवंदिता,
घूड़ीवासरे सदा ।
दिव्यवृत्तिपावनी,
सिद्धिदा सनातनी ॥

अयोध्यादेवी स्मृता,
लम्बगाँवशोभिता ।
रमोलीक्षेत्रस्थिता,
होमद्रव्यपूजिता ॥

प्रतापनगरवंदिता,
 ऊणग्रामस्थिता ।
 महादेवी पावनी,
 पुण्यलोकदायिनी । ।

क्वीलीखालविश्रुता,
 नवदुर्गाप्रपूजिता ।
 मोदिता सुपुष्पकैः ,
 देविका सुरेश्वरी । ।

सर्वेश्वरी स्थिता,
 लम्बगोवशोभिता ।
 दिव्यरूपपावनी,
 सर्वलोकधारिणी । ।

सेमाभरदारे तु,
 देवीरूप पाविनी ।
 दुर्गतिर्विनाशिनी,
 मोहपाशहारिणी । ।

डंगवालगाँवस्थिता,
वणमाक्षेत्रपावका ।
कालीदेवी स्मृता,
महातीर्थपूजिता ।।

विश्वदेवऽलंकृता,
सर्वदेववंदिता ।
दक्षिणकालिका महा,
सेमावणमास्थिता ।।

सिल्लीसिलगढे विगा,
चण्डीरूपपूजिता ।
पुण्यक्षेत्रस्थिता,
सर्वलोकभूषिता ।।

जाखचंबास्थिता,
नवदुर्गाप्रकीर्तिता ।
पूजिता सुयज्ञकैः ,
हविद्रव्यपावकैः ।।

पालीग्रामपूजिता,
चम्बाक्षेत्रस्थिता ।
सरस्वती सुदीपिका.
मूढताविदारणी । ।

वग्धारख्यापका,
भैरवी सुमंगला ।
मोहवृत्तिभ्रशंका,
सर्वलोकसंश्रया । ।

असुरवृत्तिनाशका,
देववृत्तिपावका ।
गाननासुरख्यापका,
महाकाली पूजिता । ।

सुरखण्डापर्वते,
कालेश्वरी स्मृता ।
कर्ममूलनाशिनी,
योगगम्यपावनी । ।

पालकोटभूषिता,
 त्रिगुणात्मिका विभा ।
 पूजिता सुमोदकैः ,
 सर्वलोकरक्षिका । ।

द्रुगदेवीपूजिता,
 बछेलीखालस्थिता ।
 बहुविधा प्रकल्पिता,
 सहस्रनामधारिता । ।

पंतगाँवपूजिता,
 परादेवी पावका ।
 संतजनसुधयायिता,
 महर्षिभिः पूजिता । ।

पुंडलग्रामपूजिता,
 भुवनेश्वरी महा ।
 प्राणिजनसमर्पिता,
 अमृतस्वरूपिका । ।

वागीश्वरीवंदिता,
 ब्रह्मपदऽलंकृता ।
 हिण्डोलाखालस्थिता,
 वागेश्वरेऽस्मृता ॥

कांडीखालपूजिता,
 देविका भद्रेश्वरी ।
 सुरम्यतीर्थस्थिता,
 मंगलप्रदायका ॥

हृषीकेशभूषिता,
 दुर्गादेवीपावनी ।
 दुर्गतिर्विनाशिनी,
 सर्वतापहारिणी ॥

मसूरीसंस्थिता,
 देवीतीर्थशोभिता ।
 पूजिता माहेश्वेरी,
 स्वागता सुभवितभिः ॥

कालिसीप्रपूजिता,
महाकाली विश्रुता ।
यत्र पापनाशका,
कालिंदी सुख्यापका ।।

महालक्ष्मी सुस्मृता,
हृषीकेशचंद्रिता ।
विष्णुदेवशोभिता,
त्रिलोकभूषिता ।।

नारायणी सुदेविका,
हरिद्वारशोभिता ।
पूजिता सनातनी,
दीनतापहारिणी ।।

भीमेश्वरीचंद्रिता,
भीमगोडारिथिता ।
सुरसरिऽलंकृता,
गंगाद्वारस्मृता ।।

महाकालीपूजिता,
कनखले सुख्यापका ।
मंगलप्रदायका,
भक्तवत्सला सदा । ।

भद्रकाली पावका,
कनखले सुख्यापका ।
सौम्यरूपस्थिता,
मंगलविधायका । ।

सतीकुण्डविश्रुता,
कनखले सुरिथिता ।
पूजिता परात्मिका,
न्योतिरूपपावका । ।

शीतला प्रकल्पिता,
कनखले सुख्यापका ।
श्रद्धाभावपूजिता,
सर्वरोगनाशका । ।

गायत्री सुस्मृता,
महातीर्थपावका ।
शांतिकुंजस्थिता,
त्रिलोकरख्यापका ॥

गंगादेवीपूजिता,
कुशाघाटस्थिता ।
तीर्थख्यापका महा,
बह्मरूपपावका ॥

वैष्णोदेवीस्थिता,
गंगाद्वारशोभिता ।
सर्वदेवऽलंकृता,
मातृरूपपावका ॥

सतीघाटविश्रुता,
कनखले सुरिस्थिता ।
सुरसरिसुशोभिता,
मुक्तिदायका सदा ॥

गर्गाचलसुपर्वते,
 नैनादेवीभूषिता ।
 तल्लीतालरिथता,
 सर्वलोकरक्षिता । ।

नैनीतालख्यापका,
 सर्वलोकव्यापका ।
 दिव्यरूपसंरिथता,
 देवभूमिशोभिता । ।

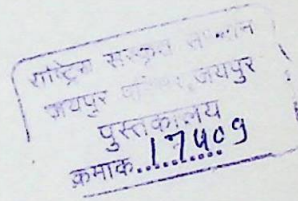
गंगोलीहाटस्मृता,
 कालिका सुमंगला ।
 मोदिता सुभक्तिभिः ,
 वैभवं प्रदा सदा । ।

पिथौरागढजनपदे,
 देधुरासुविश्रुता ।
 दिव्यपीठरिथता,
 देविका सनातनी । ।

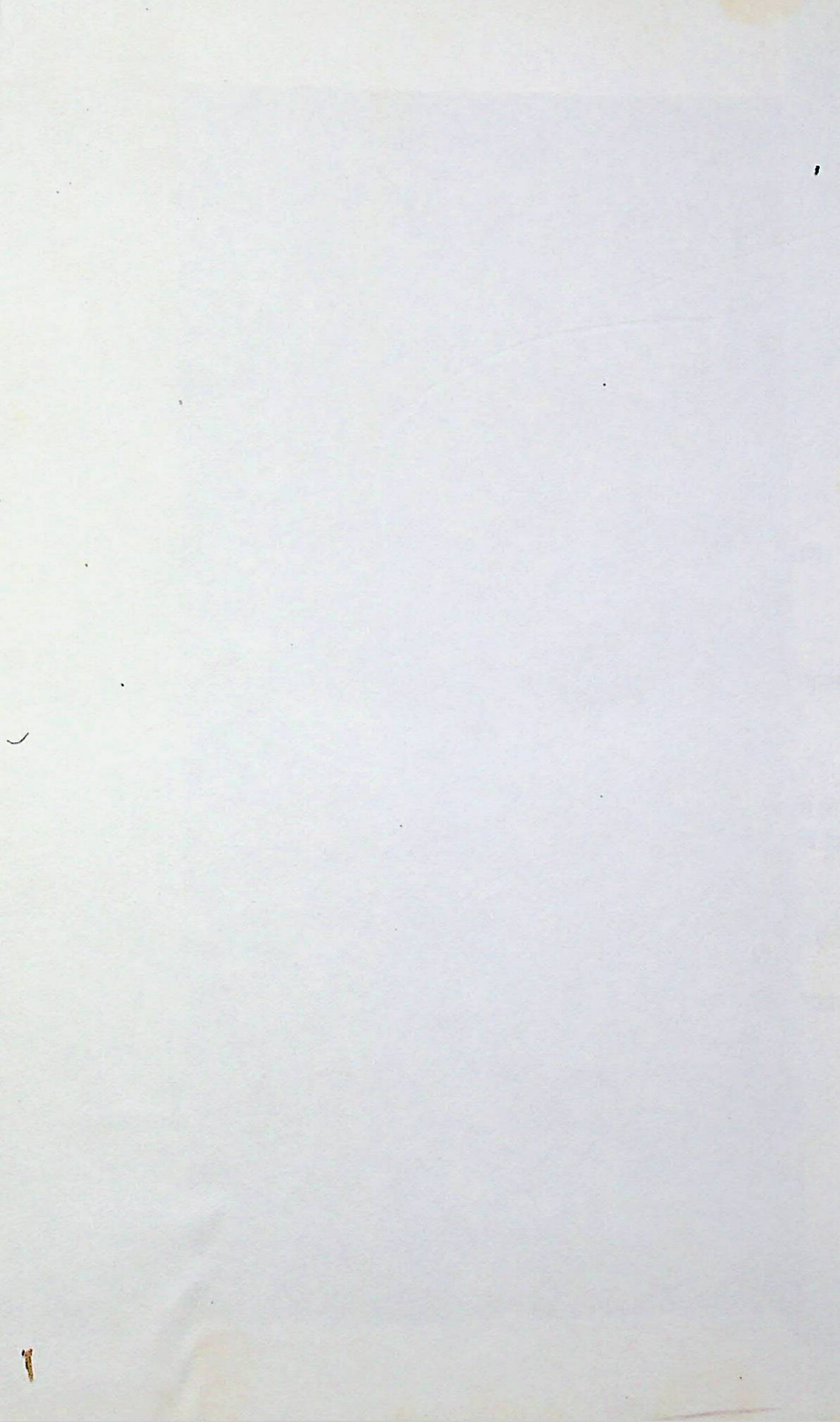
पूजिता सुबोधनैः
 देविका वरं प्रदा ।
 नारिकेलमोदिता,
 पुष्पऽर्चनैः सदा ।।

कालिका सुमंगला,
 महातीर्थस्थिता ।
 पूजिताबलिप्रिया,
 जागेश्वरे सदा ।।

तत्रैव व्यापका,
 चण्डीदेवी ख्यापका ।
 सर्वलोकभासिनी,
 इहैव तीर्थपूजिता ।।



देवीस्तोत्रपीठं,
 सर्वपापनाशकम् ।
 यः संस्मरेत् नित्यं,
 पुनर्जन्म न जायते ।।





सरिता बुक हाउस

324, गुरु रामदास नगर, लक्ष्मी नगर दिल्ली-92

दूरभाष : 2450792